Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۝

(सूरत आले-इम्रान आयत :111)

अनुवाद: तम बेहतरीन उम्मत हो जो समस्त इन्सानों के लाभ के लिए निकाली गई है तुम अच्छी बातों का आदेश देते हो और बुरी बातों से रोकते हो। और अल्लाह पर ईमान लाते हो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 32

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

6 ज़िल्हज्ज 1440 हिजरी कमरी 8 वफा 1397 हिजरी शमसी 8 अगस्त 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

ख़ुदा के लिए अक्ल से काम लो और इस लिए के अक्ल में तेज़ी और ज़हानत पैदा हो सच्चे और मुत्तकी बनो पवित्र अक्ल आसमान से आती है और अपने साथ एक नूर लाती है आकाशीय नूर उतरता है और वे दिलों को रोशन किया चाहता है और इस को स्वीकार करने और उस से लाभ उठान के लिए तय्यार हो जाओ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

सच्चे और मुत्तक़ी बनो ताकि अक़्ल में नवीनता और ज़हानत पैदा हो

ज़रा समझो और सोचो। ख़ुदा के लिए अक़्ल से काम लो और इसलिए कि अक़्ल में नवीनता और ज़हानत पैदा हो। सच्चे और मुत्तक़ी बनो। पाक अक़्ल आसमान से आती है और अपने साथ एक नूर लाती है लेकिन वह काबिल जौहर की तलाश में रहती है। इस पाक सिलसिला का क़ानून वही क़ानून है जो हम जिस्मानी क़ानून में देखते हैं। बारिश आसमान से पड़ती है लेकिन कोई जगह इस बारिश से गुलज़ार होती है और कहीं कांटे और झाड़ियाँ ही उगती हैं और कहीं वही क़तरा बारिश का समुंद्र की तह में जा कर एक नायाब मोती बनता है। किसी के कथन के अनुसार

दर बाग़ लाला रुवीद व दर शोरह बूम ख़स

(वह बाग़ में तो फूल उगाती है और बंजर धरती पर घांस फूस)

अगर ज़मीन क़ाबिल नहीं होती तो बारिश का कुछ भी फ़ायदा नहीं पहुंचता बल्कि उल्टा हानि और नुक़्सान होता है। इसलिए आसमानी नूर उतरता है और वह दलों को रोशन किया चाहता है। इस के क़बूल करने और इस से फ़ायदा उठाने को तैयार हो जाओ ताकि ऐसा ना हो कि बारिश की तरह कि जो ज़मीन क़ाबिल जौहर नहीं रखती वह इस को नष्ट कर देती है। तुम भी बावजूद नूर के होते अन्धेरे में चलो और ठोकर खा कर अंधे कुँवें में गिर कर हलाक हो जाओ। अल्लाह तआला मेहर-बान माता से भी बढ़कर मेहरबान है। वे नहीं चाहता कि इस की मख़लूक़ नष्ट हो। वह हिदायत और रोशनी की राहें तुम पर खोलता है मगर तुम उन पर क़दम मारने के लिए अक़्ल और नफसों के तज़किया से काम लू। जैसे ज़मीन कि जब तक हल चला कर तैयार नहीं की जाती , बीज रोपण इस में नहीं होता। इसी तरह जब तक मुजाहिदा और रियाज़त से नफ़सों की पवित्रता नहीं होती पाक अक़्ल आसमान से उतर नहीं सकती।

इस ज़माना में ख़ुदा ने बड़ा फ़ज़ल किया और अपने धर्म और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समर्थन में ग़ैरत खा कर एक इन्सान को जो तुम में बोल रहा है भेजा ताकि वह इस रोशनी की तरफ़ उनको बुलाए। अगर ज़माना में ऐसा फ़साद और फ़ित्ना ना होता और धर्म के समाप्त करने के लिए जिस किस्म की कोशिशें हो रही हैं ना होतीं तो कोई हर्ज ना था मगर अब तुम देखते हो कि हर तरफ़ दाएं तथा बाएं इस्लाम ही को समाप्त करने की फ़िक्र में कौमें लगी हुई हैं। मुझे याद है और बराहीन अहमदिया में भी मैंने ज़िक्र किया है कि इस्लाम के ख़िलाफ़ छ: करोड़ किताबें लिखी और संकलन हो कर प्रकाशित की गई हैं। अजीब बात है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों की संख्या भी छ: करोड़ और इस्लाम के ख़िलाफ़ किताबों की गिनती भी इसी क़दर। अगर इस ज़्यादा तादाद को जो अब तक इन पुस्तकों में हुई है छोड़ भी दिया जाए तो भी हमारे विरुद्ध एक एक किताब हर एक मुसलमान के हाथ में दे चुके हैं। अगर अल्लाह तआला का जोश ग़ैरत ना होता और اِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (अल्हिज्र :10) उस का वादा सच्चा ना होता तो यक़ीनन समझ लो कि इस्लाम आज दुनिया से उठ जाता और इस का नाम तथा निशान तक मिट जाता। मगर नहीं ऐसा नहीं हो सकता। ख़ुदा का छुपा हुआ हाथ उस की हिफ़ाज़त कर रहा है। मुझे अफ़सोस और दु:ख इस बात का होता है कि लोग मुसलमान कहला कर नाते ब्याह के बराबर भी तो इस्लाम का फ़िक्र नहीं करते और मुझे अक्सर बार पढ़ने का संयोग हुआ है कि ईसाई औरतों तक मरते वक़्त लाखों रुपया ईसाई दीन की प्रचार और प्रसार के लिए वसीयत कर मरती हैं और उनका अपनी ज़िन्दगियों को ईसाईयत के प्रकाशन में व्यतीत करना तो हम रोज़ देखते हैं। हज़ारों लेडी मिश्नरीज़ घरों और गलियों में फुर्ती और जिस तरह बन पड़े नक़द ईमान छीनती फिरती हैं। मुसलमानों में से किसी एक को नहीं देखा कि वह पच्चास हज़ार रुपया भी इस्लाम के इशाअत लिए वसीयत कर मरा हो। हाँ शादियों और दुनियावी रस्मों पर तो बेहद खर्च होते हैं और क़र्ज़ लेकर भी दिल खोल के फ़ुज़ूल ख़र्चीयाँ की जाती हैं। मगर ख़र्च करने के लिए नहीं तो इस्लाम के लिए नहीं। अफ़सोस ! अफ़सोस !! इस से बढ़कर और मुसलमानों की रहम योग्य हालत क्या होगी?

शेष पृष्ठ 12 पर

125 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 27, 28, 29 दिसम्बर 2019 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 125 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 27, 28 और 29 दिसम्बर 2019 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-4)

फ़िलाडेल्फ़िया से रवानगी और बाल्टीमोर में आना,मस्जिद बैतुल समद बाल्टीमोर का निरीक्षण तथा उद्घाटन आयोजन,नमाज़ जनाज़ा हाज़िर,प्रैस कान्फ्रैंस, सैनेटर Hon. Ben Cardin और बाल्टीमोर के अन्य सम्मान्नीय की सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

मैं आपको पूर्ण विश्वास से कह सकता हूँ कि इन्शा अल्लाह यह मस्जिद अमन की निशानी बन कर उभरेगी और इस से जो प्यार, मुहब्बत, भाईचारा फूटेगा वह इस पूरे शहर बल्कि इस से भी आगे जाएगा, यह एक ऐसा मीनार बनेगी जो चारों तरफ रोशनी फैलाएगी

यह ऐसा अमन का स्थान होगी जहां इकट्ठे हो कर इबादत करने वाले अपने पड़ोसियों से हुस्न-ए-सुलूक करेंगे और उनके हुक़ूक़ अदा करेंगे। यह इस्लाम की रोशन शिक्षा को ज़ाहिर करेगी और सारे भय और चिन्ताओं को दूर कर देगी जो हमारे मज़हब के बारे में पाए जाते हैं

यद्यपि यह दावे करना आसान है लेकिन जल्द ही आप मेरे इन दावों की ख़ुद तस्दीक करेंगे कि अहमदी मुसलमान वही करते हैं जिसकी वे तब्लीग़ करते हैं ओर वे इस्लाम की अमन वाली शिक्षा का सिर्फ दावा ही नहीं करते बल्कि उसे मुक़द्दम भी रखते हैं

मस्जिद बैतुल समद(बाल्टीमोर, अमरीका) के उद्घाटन के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मस्जिद बैतुलसमद बाल्टीमोर में तशरीफ लाना

1 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की मस्जिद बैतुल समद तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर पहले मिशन हाऊस के रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले आए। यह यहां के मुबल्लिग़ सिलसिला का घर है। यहां अस्थायी स्थापना का प्रबंध किया गया था। अढ़ाई बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुल समद तशरीफ़ लाए जहां जमाअत के लोगों मर्दो औरतों की एक बड़ी संख्या ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का भरपूर स्वागत किया। पुरजोश अंदाज़ में नारे बुलंद किए। बच्चों और बच्चियों के ग्रुपस ने स्वागत गीत पेश किए। जमाअत बाल्टीमोर के लिए आज का दिन किसी ईद से कम नहीं था। आज का मुबारक दिन उनके लिए बहुत ख़ुशियां और बरकतें लेकर आया था। हुज़ूर अनवर के मुबारक क़दम उनकी ज़मीन पर पहली बार पड़ रहे थे। मर्द औरत, बच्चे बच्चियां सुबह से ही अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए जमाअत के सैंटर मस्जिद बैतुल समद पहुंचना शुरू हो गए थे। बाल्टीमोर की स्थानीय जमाअत के अतिरिक्त इर्दगिर्द की जमाअतों से लोगों बड़ी संख्या से पहुंचे थे। कुछ लोग तो बड़ी दूर की जमाअतों से दो-दो तीन तीन हज़ार मील का बड़ा लंबा सफ़र तय करके आए थे। हुज़ूर अनवर का स्वागत करने वालों की संख्या एक हज़ार आठ सौ के लगभग थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपना हाथ बुलंद करके उनके नारों का जवाब दे रहे थे।

मस्जिद बैतुल समद का निरीक्षण तथा उद्घाटन

हुज़ूर अनवर ने मस्जिद की बाहरी दीवार में लगी तख़्ती की निक़ाब कुशाई फ़रमाई और दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद से जुड़ी हुई लॉबी में तशरीफ़ ले आए और तस्वीरों की नुमाइश का निरीक्षण फ़रमाया। इस लॉबी में विभिन्न हिस्सों में दीवार पर तस्वीरें लगाई गई हैं। तस्वीरों की इस नुमाइश के पाँच हिस्से हैं। पहला हिस्सा मस्जिद बैतुल समद की तस्वीरों और अमरीका में क़ायम होने वाली कुछ दूसरी मस्जिद की तस्वीरों पर आधारित है।

दूसरा हिस्सा दुनिया-भर में जमाअत अहमदिया की बुनियाद होने वाली कुछ मस्जिद की तस्वीरों पर आधारित है। तीसरा हिस्सा जमाअत अहमदिया अमरीका का संक्षिप्त इतिहास इसी तरह जमाअत अहमदिया अमरीका के सेवा के प्रोग्रामों की तस्वीरों पर आधारित है। चौथा हिस्सा ख़ुलफ़ाए अहमदियत के अमरीका के दौरों पर जबकि पांचवां हिस्सा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से विभिन्न जातियों और देशों के लीडरों की मुलाक़ात और हुज़ूर अनवर के विभिन्न देशों में सम्बोधनों की तस्वीरों पर आधारित है।

नुमाइश के निरीक्षण के दौरान ही बाल्टीमोर में रहने वाले एक पुराने अफ्रीकन अमरीकन अहमदी ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का अवसर प्राप्त किया। महोदय ने 1960 ई में बैअत की थी। महोदय ने इस साल जलसा सालाना यूके पर आने का प्रोग्राम बनाया था ताकि ज़िन्दगी में एक बार हुज़ूर अनवर से मिल सकें लेकिन अपनी बीमारी और तकलीफ़ के कारण सफ़र के योग्य ना हो सके। आज अल्लाह तआला ने उनकी इच्छा उनके घर में पूरी कर दी। महोदय बहुत ख़ुश थे और उनकी आँखें आंसूओं से भरी हुई थीं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर मस्जिद के मर्दाना हाल में तशरीफ़ ले आए और निरीक्षण फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने किचन और डाइनिंग हाल का भी निरीक्षण फ़रमाया। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने मस्जिद के बाहरी हिस्सा का भी निरीक्षण फ़रमाया और सदर साहिब जमाअत बाल्टीमोर डाक्टर फ़हीम यूनुस क़ुरैशी साहिब से इस तामीर पर होने वाले खर्चों के बारे में से पूछा। जिस पर महोदय ने निवेदन किया कि चर्च की इमारत की ख़रीद और उसकी रिनोवेशन करके मस्जिद की इमारत में तबदील करने पर बीस लाख डालर के लगभग ख़र्च हुए हैं। इस के बहुत से हिस्से तबदीली की सूरत में नए सिरे से बुनियाद हुए हैं।

यह इमारत अगस्त 2015 ई में ख़रीदी गई। जनवरी 2017 ई से नवंबर 2017 ई तक उसे रिनोवेट करके और कुछ हिस्से नए सिरे से बुनियाद करके मस्जिद की शक्ल में तबदील किया गया।

मस्जिद का कल छत वाला हिस्सा 13 हज़ार वर्ग फुट पर आधारित है। मर्दों और औरतों के नमाज़ पढ़ने के अलग अलग हाल हैं जिनमें चार सौ के लगभग लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं। दो डाइनिंग क्षेत्र भी मौजूद हैं। दफ़्तर भी बनाए गए हैं। उनके अतिरिक्त दो कान्फ्रैंस रुम भी हैं । इस मस्जिद में दो लाइब्रेरियां स्थापित की गई हैं । एक कमर्शियल किचन मौजूद है। इस के अतिरिक्त एक रैगूलर किचन भी है। चार क्लास रूमज़ भी हैं जहां बच्चों की तालामी तरबियती कक्षाएं होती हैं। एक उच्च स्तर का आडियो वीडियो सिस्टम भी मस्जिद में लगाया गया है। इतफ़ाल तथा नासरात के लिए बिल्डिंग के अंदर खेलने की सुविधा भी उपलब्ध की गई है।

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

इन तीन दिनों में खासतौर पर दुनिया की मुहब्बत बिलकुल ठंडी करनी होगी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरी जमाअत में गिने जाने के लिए, अल्लाह तआला की मुहब्बत हासिल करने के लिए, इस के फ़ज़्लों का वारिस बनने के लिए, अल्लाह तआला के लुतफ़ तथा एहसान को हासिल करने के लिए हर पक्ष से और हर पहलू से अपनी व्यावहारिक हालतों को ठीक करने की ज़रूरत है और ये जलसे के आयोजन इसी उद्देश्य के लिए किए गए हैं कि नेकियों की अदायगी की तरफ़ ध्यान पैदा हो।

हमारे हर कर्म में ख़ुदा तआला की रज़ा के प्राप्ति की झलक नज़र आनी चाहिए

हमें ये दुआएं करनी चाहिऐं कि हम उन लोगों में शामिल ना हों जिनसे ख़ुदा तआला राज़ी नहीं बल्कि उन लोगों में शामिल हूँ जिनका ज़िक्र ख़ुदा तआला फ़रमाता है।

ख़ुदा तआला से हम दृढ़ सम्बन्ध जोड़ने वाले हों, अपने दिलों के अंधेरों को मिटाने वाले हों

अल्लाह तआला उसे बे-इंतिहा नवाज़ता है जो अपने भाई से ख़ुदा तआला के लिए मुहब्बत करता है,अतः इन दिनों को आपस की रंजिशों को दूर करने का माध्यम भी बनाएँ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा सालाना को भी शाइरुल्लाह में शामिल फ़रमाया है

दुनिया को ये बताएं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हमारी रुहानी और अख़लाक़ी हालतों में एक इन्क़िलाबी त्बदीली हुई है

ओहदेदारों की ये विशेष ज़िम्मेदारी है कि उनमें बर्दाश्त का माद्दा अधिक होना चाहिए। ओहदेदार अपने आपको हर हाल में ख़ादिम समझें और जमाअत के लोगों और जलसा में शामिल होने वाले ओहदेदारों को निज़ाम जमाअत का नुमाइंदा समझें।

असल चीज़ ओहदा नहीं बल्कि असल चीज़ अपनी बैअत के हक़ को अदा करना है

आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना, यह पहला क़दम है यह इंतिहा नहीं है,उसकी इंतिहा की प्राप्ति के लिए इस शिक्षा पर अनुकरण करना ज़रूरी है जो आपको दी गई।

हमेशा याद रखना चाहिए कि हर अहमदी के चेहरे के पीछे अहमदियत का चेहरा है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चेहरा है, इस्लाम का चेहरा है अतः हर अहमदी की ज़िम्मेदारी है कि इन चेहरों की हिफ़ाज़त करे।

जलसा सालाना जर्मनी के आरम्भ पर हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वर्णन की गई शिक्षाओं पर अनुकरण करते हुए जलसा सालाना के उद्देश्य तथा लक्ष्यों को पूरा करने की नसीहत।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 5 जुलाई 2019 ई. स्थान - DM-Arena, कालसरोए (जलसागाह), जर्मनी

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

ख़ुत्बा के आरम्भ में हुज़ूर अनवर ने मुंतज़मीन जलसा से पूछा : आख़िर तक ठीक आवाज़ आ रही है? आपका इंतिज़ाम है, चैक किया है?

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमायाः अल्लाह तआला के फ़ज़्लों और इनामों में से जो हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर मिले एक यह भी है और यह बहुत बड़ा फ़ज़्ल और इनाम है जो हमें जलसा सालाना की सूरत में मिल रहा है ताकि हम अपनी रुहानी और अख़लाक़ी और इलमी बेहतरी के लिए कोशिश कर सकें। अल्लाह तआला का सानिध्य हासिल करने और तक़्वा में बढ़ने के सामान कर सकें। एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने के लिए अपने दिलों को साफ़ करें और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलसा की स्थापना के मक़सद को पूरा करने की कोशिश कर सकें। आपस में रंजिशों और दूरियों को सुलह और क़ुरब में बदलने की कोशिश करें। अपने आपको व्यर्थ बातों से पाक करने की कोशिश करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ये सारी बातें जलसा के आयोजन के मक़सद में बयान फ़रमाई हैं

अहमदियों की एक बहुत बड़ी संख्या सारा साल जलसा सालाना का इंतज़ार करती है और कैलंडर का अगला साल शुरू होते ही इस इंतज़ार में और जलसा के आयोजन के शौक़ में अधिक तेज़ी आ जाती है। यहां के रहने वालों को भी इंतज़ार होता है जो यहां एक अर्से से रह रहे हैं और खासतौर पर उनको तो बहुत इंतज़ार होता है जो पाकिस्तान से नए नए यहां आते हैं और अपने हालात की वजह से यहां असाइलम भी लेते हैं। क्योंकि वे क़ानूनी पाबंदियों की वजह से वहां तो जलसा आयोजित नहीं कर सकते और एक अर्से से उनको यह पता ही नहीं कि जलसा सालाना क्या चीज़ है और अब उस की संख्या भी सैंकड़ों से हज़ारों में हो गई है और बढ़ती जा रही है। इसी तरह बाहर के देशों से सिर्फ जलसा में शामिल होने वालों की संख्या भी बढ़ती जा रही है और काफ़ी संख्या में अब लोग जर्मनी में भी आ रहे हैं। इस साल तो अफ़्रीक़ा के भी कुछ देशों के कुछ लोग जलसा पर आए हैं जिनमें स्थानीय लोग भी शामिल हैं। जलसा में शामिल होने का शौक़ और जलसा का इंतज़ार इसलिए होता है और होना चाहिए कि जलसा के आयोजन के मक़सद को हासिल करने की कोशिश करें और जो यह सोच नहीं रखता और इस नीयत से जलसा में शामिल नहीं होता उस का जलसा का इंतज़ार भी फ़ुज़ूल और व्यर्थ है और जलसा में शामिल होना भी फ़ुज़ूल और व्यर्थ बात है। अतः हर शख़्स को जो

जलसा में शामिल हो रहा है, मर्द है या औरत इस बात को सम्मुख रखना चाहिए कि क्या वे ख़ुदा तआला की रज़ा को प्राप्त करने की कोशिश कर रहा है या उस नीयत से जलसा में शामिल हुआ है? तक़्वा में बढ़ने की कोशिश कर रहा है? उच्च आचरण का मुज़ाहरा करते हुए एक दूसरे के हक़ अदा करने की कोशिश कर रहा है या उस सोच के साथ यहां आया है? अगर नहीं तो जैसा कि मैंने कहा कि जलसा में शामिल होना, जलसा पर आना फ़ुज़ूल है और कोई फ़ायदा नहीं देगा। माहौल बे-शक प्रभाव डालता है लेकिन इस माहौल के प्रभाव को क़बूल करने के लिए इन्सान की अपनी कोशिश का भी दख़ल है। अत: इस के लिए हमें कोशिश करनी होगी ताकि इन सारी बातों को पाना संभव हो और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को हम जज़्ब करने वाले हों और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जलसा पर आने वालों के लिए की गई दुआओं के भी अधिकारी बनें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन लोगों से बेज़ारी का इज़हार फ़रमाया है जो इस सोच के साथ इस जलसा में शामिल नहीं होते और अपने कर्मों को इस के अनुसार नहीं ढालते। आप फ़रमाते हैं कि

"मैं हरगिज़ नहीं चाहता कि हाल के कुछ पीरों की तरह सिर्फ ज़ाहिरी शौकत दिखाने के लिए अपनी बैअत करने वालो को इकट्ठा करूँ बल्कि वे उद्देश्य जिस के लिए मैं रास्ता निकालता हूँ मानव जाति का सुधार है।

(शहादतुल क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन, जिल्द 6, पृष्ठ 395)

पस आप ने स्पष्ट फ़र्मा दिया कि ज़ाहिरी शान तथा शौकत और दिखावे के लिए लोगों को जमा करना मक़सद नहीं है जिस तरह गद्दी नशीन पीर उर्सों और मेलों के नाम पर लोगों को इकट्ठा कर लेते हैं। बल्कि वह मक़सद जिसके लिए मैंने जलसा का तरीक़ा धारण किया है सिर्फ यह है कि अल्लाह तआला की मख़लूक़ का सुधार हो। वह अल्लाह तआला का हक़ भी अदा करने वाले हों और आपस में एक दूसरे का हक़ भी अदा करने वाले हों। और अपना सुधार ना करने वालों से सिर्फ बेज़ारी का इज़हार नहीं फ़रमाया बल्कि आप ने घृणा का भी इज़हार फ़रमाया है। तीस हज़ार या पैंतीस हज़ार या चालीस हज़ार की भी हाज़िरी हो जाती है तो इस का क्या लाभ है अगर आप की इच्छा को, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़ाहिश को पूरा करते हुए हम बैअत करने के बाद अपने दिल में दुनिया की मुहब्बत लिए बैठे हों और अल्लाह और रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत इस दुनियावी मुहब्बत पर हावी नहीं है। और अल्लाह तआला और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों के अनुसार हम अपनी ज़िंदगियां गुज़ारने वाले नहीं और इन तीन दिनों में भी दुनिया ही हमारे सामने हो। अत: हमें इन बातों पर ध्यान करना चाहिए।

कुछ दिन पहले रमज़ान ख़त्म हुआ है जो एक रुहानी सुधार और तरक़्क़ी का महीना था जिस में ज़ाती इबादतें और रोज़े और ज़िक्र इलाही का मौक़ा हर एक मोमिन को मिला और अब एक और तीन दिन का कैंप है जिस में धार्मिक और इल्मी तरक़्क़ी के अवसर के साथ इबादतों और ज़िक्र इलाही का माहौल है और उन सारी बातों के इज्तिमाई इज़हार का बेहतर मौक़ा है। सब जमा हो कर इबादतों की तरफ़ ध्यान दे रहे हैं, नवफ़िल भी पढ़ते हैं, तहज्जुद पढ़ते हैं और चाहे अपनी अपनी ज़बान में, जो उनके दिल में दुआएं और ज़िक्र इलाही है वे ज़िक्र इलाही कर रहे हों लेकिन पूरा माहौल अगर ज़िक्र इलाही कर रहा है तो वे भी ज़िक्र इलाही का एक सामूहिक रूप है। अगर हम इस से फ़ायदा ना उठाएं तो फिर कब और किस तरह उठाएँगे।

अत: एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हम पर डाली है और अपने मानने वालों से बड़ी आशाएं रखी हैं। ये कोई मामूली बात नहीं है कि इस माहौल का हक़ीक़ी फ़ायदा तभी होगा जब दुनिया की मुहब्बत अल्लाह तआला और इस के रसूल की मुहब्बत के मुक़ाबले में ठंडी हो जाएगी। दुनिया में रहते हुए दुनिया की मुहब्बत को ख़ुदा और इस के रसूल की मुहब्बत के मुक़ाबले में सानवी हैसियत देना यह बहुत बड़ी बात है और यही चीज़ है जो हक़ीक़ी मोमिन बनाती है। इस जलसा के तीन दिनों के बाद दुनिया के काम भी करने हैं। लेकिन इस तरबीयत का और शामिल होने का फ़ायदा तभी होगा कि जब हम दुनिया के कामों के बावजूद धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देंगे। इन तीन दिनों में खासतौर पर दुनिया की मुहब्बत बिलकुल ठंडी करनी होगी।

हम जलसा के दिनों में ये भी यहां देखते हैं कि बाज़ार भी उपलब्ध किए गए हैं, स्टॉल भी लगते हैं और दुनियावी चीज़ों की यहां क्रय तथा विक्रय भी होती है लेकिन जलसा में शामिल होने वाले भी और बाज़ार लगाने वाले भी इस बात का ख़्याल रखें कि बाज़ारों में फिरना और शॉपिंग करना और अपनी चीज़ों पर लाभ हासिल करने की कोशिश करना दुनियादारी है। इसलिए ख़रीदार भी और दुकानदार भी इस से बचें और जलसा के जो लोग हैं ये दोनों खासतौर पर जलसा की कार्रवाई ध्यान से सुनें और इस के बाद वक़्फ़ों में दोनों का हक़ है, दोनों को इजाज़त है कि बाज़ारों में जाएं लेकिन फिर बाज़ार का हक़ अदा करने की कोशिश करें और बाज़ारों के हक़ यह हैं कि वहां चलते फिरते एक दूसरे को सलाम करें। ज़िक्र इलाही में व्यस्त रहें। दुकानों पर किसी ख़ास चीज़ को देखने के बाद भीड़ कर के धक्कम पेल ना करें। दुकानदार उचित लाभ से अपनी चीज़ें बेचें। किसी की मजबूरी समझ कर नाजायज़ लाभ ना कमाएं। बाज़ारों में भी जैसा कि मैंने कहा ज़िक्र इलाही निरन्तर करते रहें। जो दुकानदार हैं वे भी इस दौरान में (ज़िक्र इलाही) भी करते रहीं। यह ज़ाहिरी शक्ल में हम धारण करेंगे तो हमारे दिलों की हालत भी बदलेगी और हमारे अंदर तक़्वा भी पैदा होगा, अल्लाह तआला की मुहब्बत भी पैदा होगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमारे अन्दर नेकियां पैदा करने और तक़्वा का स्तर बुलंद करने के लिए और अधिक फ़रमाते हैं कि

"ख़ुदा तआला ने जो इस जमाअत को बनाना चाहा है तो इस से उद्देश्य यही रखी है कि वह वास्तविक मार्फ़त जो दुनिया से समाप्त हो गई थी और वह हक़ीक़ी तक़्वा तथा पवित्रता जो इस ज़माना में पाई नहीं जाती थी उसे दुबारा क़ायम करे।

(उद्धरित मलफ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 277-278)

फिर आप एक अवसर पर हमें अपने तक़्वा के स्तर बुलंद करने की नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि

हे वे समस्त लोगो! जो अपने आप को मेरी जमाअत गिनते हो। आसमान पर तुम उस वक़्त मेरी जमाअत शामिल किए जाओगे जब सचमुच तक़्वा की राहों पर क़दम मरोगे।

(किश्ती नूह, रुहानी ख़ज़ायन, जिल्द 19 ,पृष्ठ 15)

फिर एक जगह अल्लाह तआला की महानता और मुहब्बत दिलों में पैदा करने की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं कि

"ख़ुदा की महानता अपने दिलों में बिठाओ। और इस की तौहीद का इक़रार ना सिर्फ ज़बान से बल्कि व्यावहारिक तौर पर करो ताकि ख़ुदा भी व्यावहारिक तौर पर अपना लुतफ़ तथा एहसान तुम पर ज़ाहिर करे।

(अल्वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 308)

अत: ये बातें हैं जिन्हें हमें हर वक़त अपने सामने रखना चाहिए कि किस तरह हम ने हक़ीक़ी तक़्वा पैदा करना है। किसी एक नेकी को करना तक़्वा नहीं है बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक जगह यह भी फ़रमाया है कि समस्त प्रकार की नेकियां करो, ख़ुदा तआला और इस के बंदों के समस्त प्रकार के हुक़ूक़ अदा करना वास्तविक तक़्वा है।(उद्धरित ज़मीमा बराहीन अहमदिया हिस्सा 5, रुहानी ख़ज़ायन, जिल्द 21 ,पृष्ठ 210)इस लिहाज़ से अगर हम जायज़ा लें तो ख़ुद ही हमारे सामने हमारी हालतों की जो सूरत बनती है वह आ जाएगी।

कुछ लोग बाहर जमाअती कामों में अच्छे हैं तो घरों में बीवी बच्चे उनसे तंग आए हुए हैं। कुछ घरों के हक़ अदा कर रहे हैं तो अल्लाह तआला के हक़ और इस की इबादत की तरफ़ ध्यान नहीं है। इस किस्म की शिकायतें मिलती हैं। कुछ बज़ाहिर इबादत करने वाले हैं तो समाज के आपस के मामलों में एक दूसरे का हक़ मारने वाले हैं। कुछ दुनिया वालों के सामने कुछ नेकियां करने वाले हैं तो सिर्फ दिखावे के लिए और भूल जाते हैं कि अल्लाह तआला हमारी नीयतों को भी जानता है और वह हमें हर हाल में देख रहा है। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मेरी जमाअत में गिने जाने के लिए, अल्लाह तआला की मुहब्बत हासिल करने के लिए, उस के फ़ज़्लों का वारिस बनने के लिए, अल्लाह तआला के लुतफ़ तथा एहसान को हासिल करने के लिए हर तरफ से और हर पहलू से अपनी व्यावहारिक हालतों को ठीक करने की ज़रूरत है और ये जलसा के आयोजन इसी उद्देश्य के लिए किए गए हैं कि नेकियों की अदायगी की तरफ़ ध्यान पैदा हो। और जो तक़रीर करने वाले हैं वे भी अपनी तक़रीरों में इस तरफ़ ध्यान दिलाते रहें। हमें एक माहौल में रखकर इस तरफ़ ध्यान दिलाई जाती रहे कि हमारे हर कर्म में ख़ुदा तआला की रज़ा के हुसूल की झलक नज़र आनी चाहिए। इस मक़सद को हासिल करने के लिए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कहा

"याद रखो कि कामिल बंदे अल्लाह तआला के वही होते हैं जिनके बारे में फ़रमाया है

لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ

(अन्नूर:38)अर्थात जिन्हें ना कोई तिजारत ना ख़रीद तथा फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल रखती है। फ़रमाया कि जब दिल ख़ुदा के साथ सच्चा सम्बन्ध और इशक़ पैदा कर लेता है तो वह इस से अलग होता ही नहीं। इस की एक कैफ़ीयत आप फ़रमाते हैं कि इस तरह ,इस तरीक़ पर समझ में आ सकती है कि जैसे किसी का बच्चा बीमार हो तो चाहे वह कहीं जाए,किसी काम में व्यस्त हो मगर उस का दिल और ध्यान उसी बच्चा में रहेगा। इसी तरह पर जो लोग ख़ुदा तआला के साथ सच्चा सम्बन्ध और मुहब्बत पैदा करते हैं वे किसी हाल में भी ख़ुदा तआला को फ़रामोश नहीं करते।

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 7 ,पृश्ठ 20-21)

अत: ये वह हालत है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम में देखना चाहते हैं और इस हालत के पैदा करने की कोशिश के लिए हम यहां जमा हुए हैं। हम में से हर एक को कोशिश करनी चाहिए और ख़ुदा तआला से दुआ भी करनी चाहिए कि हम इस हालत के हासिल करने वाले बन सकें और जब हम यह हालत पैदा करेंगे और इस के लिए कोशिश करेंगे तो फिर अल्लाह तआला भी हमें याद रखेगा जैसा कि ख़ुद उसने फ़रमाया है कि اُذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ अत: कितने ख़ुश-क़िस्मत हैं वे लोग जिनका अल्लाह तआला ज़िक्र करे, उन्हें याद रखे। हमारा मौला हमें सिर्फ इस बात पर इतना नवाज़े कि हम दुनियावी व्यवस्ताओं में अपने मौला को न भूलें और इन दिनों में खासतौर पर इस बात की हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम ख़ुदा तआला का हक़ीक़ी ज़िक्र करें और फिर अल्लाह तआला हमें याद रख कर अपने फ़ज़्लों का वारिस बनाए।

अत: जलसा में आने वाले भी और डयूटियाँ देने वाले भी इन दिनों में ज़िक्र इलाही से अपनी ज़बानों को तर रखने की कोशिश करें और ख़ुदा तआला का क़ुरब हासिल करने वाले बनें। इस से बड़ी और क्या बात हमारे लिए होगी कि अल्लाह तआला हमें याद रखे। अत: उस को प्राप्त करने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए और तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश के अनुसार आसमान पर आप की जमाअत शुमार होंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ये शब्द हमें फ़िक्र में डालने वाले होने चाहिऐं कि आसमान पर मेरी जमाअत तब गिने जाओगे जब सचमुच तक़्वा की राहों पर क़दम मारोगे। बैअत के बाद हम में से बहुत से लोग हैं जो अपने अज़ीज़ों की तरफ़ से भी धुतकारे गए हैं। आप में से बहुत से यहां इसलिए हिजरत करके आए कि अहमदी होने की वजह से मुख़ालिफ़ीन अहमदियत की दुश्मनी का सामना करना पड़ा। मुल्की क़ानून ने हमारी मज़हबी आज़ादी पर पाबंदियां लगाईं लेकिन इन सब बातों के बावजूद और उन सब तकलीफों के बावजूद जो पाकिस्तान में या कुछ और देशों में अहमदी बर्दाश्त कर रहे हैं या आप में से भी कुछ ने की हैं फिर हम अपने अम्लों की कमी की वजह से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शुमार ना हों और उन लोगों में और उन ख़ुश-क़िस्मत लोगों में शामिल ना हों जिनका ज़िक्र अल्लाह तआला फ़रमाता है तो ये कितना घाटे का सौदा है। अत: इन दिनों में बहुत दुआएं करें और हमें ये दुआएं करनी चाहिऐं कि हम उन लोगों में शुमार ना हों जिनसे ख़ुदा तआला राज़ी नहीं बल्कि उन लोगों में शामिल हों जिनका ज़िक्र ख़ुदा तआला फ़रमाता है। ख़ुदा तआला से हम दृढ़ सम्बन्ध जोड़ने वाले हों। अपने दिलों के अंधेरों को मिटाने वाले हों। यहां जलसा की कार्रवाई के दौरान भी और वक़्फ़ों में भी और रात को भी अल्लाह तआला के ज़िक्र के साथ यह दुआ मांगें और अह्द करें कि हे ख़ुदा हम नेक नीयत हो कर तेरे मसीह के जारी किए इस जलसा में शामिल हुए जो यक़ीनन तेरे ख़ास समर्थन और आज्ञा से जारी हुआ। इस में तेरी रज़ा के हुसूल और तेरे ज़िक्र में बढ़ने और तेरी मुहब्बत को प्राप्त करने के लिए शामिल हुए हैं। अपनी इन सारी बरकतों से हमें लाभान्वित फ़र्मा जो तूने इस जलसा से जुड़ी रखी हैं और हमारे अंदर वे पाक तबदीलियां पैदा फ़र्मा जो तू चाहता है और जिसको क़ायम करने के लिए तूने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे गुलाम को इस ज़माने में भेजा है ताकि हम उस की बैअत में हक़ीक़ी रंग में शामिल होने वाले बन सकें। अत: जब हम अल्लाह तआला से मदद मांगते हुए और दुरूद तथा इस्तिग़फ़ार करते हुए ये दिन गुज़ारेंगे, अपने दिनों को ख़ालिस अल्लाह तआला के लिए करेंगे तो हमारी इबादतों के स्तर भी बुलंद होंगे और अल्लाह तआला से सम्बन्ध की वजह से हम अल्लाह तआला की मख़लूक़ के हक़ अदा करने वाले भी बनेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इन जलसों का एक उद्देश्य यह भी बयान फ़रमाया था कि जमाअत के लोगों का आपस का प्यार तथा परिचय बढ़े।(उद्धरित आसमानी फ़ैसला, रुहानी ख़ज़ायन ,जिल्द 4 ,पृष्ठ 352) अत: जहां नए आने वालों से अहमदियत के रिश्ते की वजह से मुहब्बत और परिचय का रिश्ता क़ायम होगा वहां यह भी ज़रूरी है कि पुराने रिश्तों में मज़ीद मुहब्बत पैदा हो अल्लाह तआला उसे बे-इंतिहा नवाज़ता है जो अपने भाई से ख़ुदा तआला की लिए मुहब्बत करता है। अत: इन दिनों को आपस की रंजिशों को दूर करने का माध्यम भी बनाएँ ना यह कि यहां आकर अगर उन लोगों का आमना सामना हो जाए जिनकी आपस में रंजिशें हैं तो यह आपस की रंजिशें ग़ज़ब दिखाना शुरू कर दें और एक दूसरे के ख़िलाफ़ नफ़रतें और द्वेष और अधिक बढ़ जाए और वह जलसा के माहौल को इस वजह से फिर ख़राब करने वाले बन जाएं और बजाय अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का वारिस बनने के अल्लाह तआला की लानत और नाराज़गी का कारण बन जाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा सालाना को भी शाइरुल्ला में शामिल फ़रमाया है तो जो लोग शाइरुल्लाह के तक़द्दुस को नुक़्सान पहुंचाते हैं वे अल्लाह तआला के ग़ज़ब के नीचे आते हैं।(उद्धरित इफ़्तिताही तक़रीर जलसा सालाना 1931 ई , अनवारुल उलूम, जिल्द 12, पृष्ठ 389)अत: बड़े ख़ौफ़ का स्थान है। जिनकी नाराज़गियाँ हैं उनको चाहिए कि फ़ौरन एक दूसरे के लिए सुलह का हाथ बढ़ाएं और अब ऐसा माहौल पैदा करें जहां अंकारों के खोलूं में बंद होने के स्थान पर और इस की आग में जलने और हसद की आग में जलने की बजाय सलामती और सुलह का ख़ूबसूरत माहौल पैदा करें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस इरशाद को हमेशा अपने सामने रखना चाहिए कि मुस्लमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से किसी मुसलमान को तकलीफ़ ना पहुंचे।

(सही अल-बुख़ारी ,किताबुल ईमान, हदीस 10)

हमें जायज़ा लेना चाहिए कि क्या यह इरशाद हमारी हालतों को प्रतिबिम्बित करता है, हमारे कर्म उस के अनुसार हैं? क्या हम दावे से कह सकते हैं कि हम सौ प्रतिशत इस पर अनुकरण करने वाले हैं? अगर यह सच्च है, अगर हर कोई यह कहता है कि यह सच है तो फिर क़ज़ा में हमारा कोई मामला आना ही नहीं चाहिए और मुल्की अदालतों में हुक़ूक़ के हुसूल के लिए मुक़द्दमे जाने ही नहीं चाहिऐ। मुझे बड़े अफ़सोस से यह भी कहना पड़ रहा है कि कुछ लोग यहां जलसा पर आते हैं और ज़रा ज़रा सी बात पर पुराने हसदों और रंजिशों की वजह से जलसा के दिनों में इस माहौल में भी आपस में लड़ पड़ते हैं, लड़ाइयां शुरू हो जाती हैं। कई बार पुलिस को भी बुलाना पड़ता है। क्या यह एक मोमिन की शान है?!क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने वालों के यह कर्म हैं? यक़ीनन नहीं। ऐसे लोगों को निज़ाम जमाअत अगर जमाअत से बाहर निकाले या ना निकाले वे अपने कर्म की वजह से अल्लाह तआला की नज़र में जमाअत से बाहर निकल जाते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद के अनुसार वे आसमान पर आप की जमाअत में शामिल नहीं हैं।

अत: अपने जायज़े लें, अन्दर बाहर अलग अलग ना हो। अपने दिलों के मैल ऐसे लोगों को निकालने चाहिऐं और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए क्षमा, दरगुज़र और सुलह के तरीक़े धारण करने चाहिए। दुनिया को ये बताएं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हमारी रुहानी और अख़लाक़ी हालतों में एक इन्क़िलाबी तब्दीली हुई है। इसी तरह ओहदेदार हैं और जलसा की डयूटी देने वाले हैं वे इन दिनों में ख़ास ख़्याल रखें कि उनके अख़लाक़ के स्तर बहुत बुलंद होने चाहि। जिनकी आम दिनों में किसी से कोई रंजिश थी भी तो उन कारकुनों को जलसा के माहौल में उसे सुलह और सफ़ाई में बदलने के लिए पहल करनी चाहिए। ना यह कि बदले लेने की सूरत पैदा करें। जलसा पर आने वाला हर आदमी मेहमान है और हर ओहदेदार और हर काम करने वाले का काम है कि हर किस्म की ज़ाती रंजिशों को दूर कर के उच्च आचरण और मेहमान-नवाज़ी को प्रकट करें। ओहदेदारों की यह ख़ास ज़िम्मेदारी है कि उनमें बर्दाश्त का माद्दा ज़्यादा होना चाहिए। अत: ओहदेदार अपने आपको हर हाल में ख़ादिम समझें और जमाअत के लोग और जलसा में शामिल होने वाले ओहदेदारों

को निज़ाम जमाअत का नुमाइंदा समझें तो तभी खिचाव और लड़ाईयों के माहौल में बेहतरी आ सकती है, आपस की रंजिशें दूर हो सकती हैं।

मुझे यह भी अफ़सोस से कहना पड़ता है कि यहां कुछ जमाअतों के ओहदेदारों ने अपने ओहदों का ख़्याल नहीं रखा। जलसा के माहौल की बात नहीं कर रहा। आम हालात में भी अपनी जमाअतों की जमाअती ज़िम्मेदारियों में और धर्म की ख़िदमत को अल्लाह तआला के फ़ज़ल की बजाय दुनियावी उहदे की तरह समझा है जिसकी वजह से उन्हें तबदील भी करना पड़ा है।

अत: ऐसे लोग अगर यहां जलसा पर आए हैं तो इबादत, ज़िक्र इलाही और विनम्रता में बढ़ने की कोशिश करें। अगर उनके ख़्याल में उनके बारे में ग़लत फ़ैसले भी हुए हैं तब भी विनम्रत राहें धारण करें और आजिज़ाना राहें धारण कर के अल्लाह तआला के आगे झुकें और निज़ाम जमाअत के बारे में दिलों में रंजिशें ना लाएं। अगर ग़लत फ़ैसले हैं तो अल्लाह तआला तो हर चीज़ का इल्म रखने वाला है। वह जानता है, ग़ैब का भी इल्म रखता है , हाज़िर का भी इल्म रखता है। इस के आगे अगर विनम्र हो कर झुका जाए तो वह दुआओं को क़बूल करता है और मुश्किलों से निकालता है। हमेशा याद रखना चाहिए कि असल चीज़ ओहदा नहीं बल्कि असल चीज़ अपने बैअत के हक़ को अदा करना है। चाहे वे ओहदेदार है या जमाअत का आदमी है उसे इस हक़ की अदायगी की कोशिश करनी चाहिए और इस हक़ की अदायगी के बारे में नसीहत करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

हे मेरी ! जमाअत ख़ुदा तआला आप लोगों के साथ हो , वह क़ादिर करीम आप लोगों को सफ़र आख़रत के लिए ऐसा तय्यार करे जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्हाब तय्यार किए गए थे। ख़ूब याद रखो कि दुनिया कुछ चीज़ नहीं है। लानती है वह ज़िन्दगी जो केवल दुनिया के लिए है और बदक़िस्मत है वह जिसका तमाम दुख तथा ग़म दुनिया के लिए है। ऐसा इन्सान अगर मेरी जमाअत में है तो वह व्यर्थ तौर पर मेरी जमाअत में अपने आप को दाख़िल करता है क्योंकि वह इस ख़ुशक टहनी की तरह है जो फल नहीं लाएगी।

फ़रमाया "हे सआदत-मंद लोगो !तुम ज़ोर के साथ इस तालीम में दाख़िल हो जो तुम्हारी नजात के लिए मुझे दी गई है। तुम ख़ुदा को वाहिद ला शरीक समझो और इस के साथ किसी चीज़ को शरीक मत करो, ना आसमान में से, ना ज़मीन में से। ख़ुदा अस्बाब के इस्तिमाल से तुम्हें मना नहीं करता। लेकिन जो शख़्स ख़ुदा को छोड़कर अस्बाब पर ही भरोसा करता है वह मुशरिक है। पुरातन से ख़ुदा कहता चला आया है कि पाक-दिल बनने के सिवा नजात नहीं। अत: तुम पाक-दिल बन जाओ और नफ़सानी द्वेषों और गुस्सों से अलग हो जाओ। इन्सान के नफ़स अम्मारा में कई किस्म की गन्दियां होती हैं मगर सबसे ज़्यादा आहंकार की गन्दगी है। अगर तकब्बुर ना होता तो कोई शख़्स काफ़िर ना रहता। अत: तुम दिल के मिस्कीन बन जाओ। आम तौर पर मानव जाति की हमदर्दी करो जबकि तुम उन्हें बहिश्त दिलाने के लिए अपदेश करते हो। अत: यह उपदेश तुम्हारा कब सही हो सकता है अगर तुम इस कुछ दिन दुनिया में उनकी बदख़वाही करो। ख़ुदा तआला के फ़र्ज़ों को दिली ख़ौफ़ से करो कि तुम उनसे पूछे जाओगे। नमाज़ों में बहुत दुआ करो कि ताकि ख़ुदा तुम्हें अपनी तरफ़ खींचे और तुम्हारे दिलों को साफ़ करे। क्योंकि इन्सान कमज़ोर है हर एक बुराई जो दूर होती है वह ख़ुदा तआला की क़ुव्वत से दूर होती है और जब तक इन्सान ख़ुदा से क़ुव्वत ना पाए किसी बुराई के दूर करने पर क़ादिर नहीं हो सकता। इस्लाम सिर्फ यह नहीं है कि रस्म के तौर पर अपने आप को कलमा पढ़ने वाले कहलाओ बल्कि इस्लाम की हक़ीक़त यह है कि तुम्हारी रूहें ख़ुदा तआला के आस्ताना पर गिर जाएं। और ख़ुदा और इस के अहकाम हर एक पहलू के दृष्टि से तुम्हारी दुनिया पर तुम्हें मुक़द्दम हो जाएं।"

(तज़करतुश्शहादतैन, रुहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 63)

अत: यह वह स्तर है जिस पर हम में से हर एक को पूरा उतरने की कोशिश करनी चाहिए, ओहदेदारों को भी, काम करने वालों को भी और जमाअत के लोगों को भी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें , जो आपकी बैअत में शामिल हुए , सौभाग्यवान कहा है। हम ने अल्लाह तआला के फ़ज़ल का मौरिद बनते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने को चुना है। आप जो मेरे सामने बैठे हैं उनमें अल्लाह तआला की नज़र में नेकी थी जो यह फ़ज़ल फ़रमाया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ दी। यह सआदत मंदी का सबूत देते हुए आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना। यह पहला क़दम है ये इंतिहा नहीं है। इस की इंतिहा को प्राप्त करने के लिए इस तालीम पर अनुकरण करना ज़रूरी है जो आपको दी गई है। दुनिया के कारोबारों को और कामों को भी इस सोच के साथ हमें करना होगा जैसा कि पहले ज़िक्र हो चुका है कि अल्लाह तआला के ज़िक्र को कभी ना भूलो। अल्लाह तआला दुनियावी कारोबारों से मना नहीं करता बल्कि ये ज़रूरी है। बल्कि अल्लाह तआला इस बात से रोकता है कि इन्सान संसार से विरक्त बन जाए, दुनिया से कट जाए, ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारे जो दुनिया से कटी हुई ज़िन्दगी हो। दुनिया में रहने को अल्लाह तआला फ़रमाता है और अल्लाह तआला ने इस बात से रोका है कि दुनिया को इन्सान धर्म पर मुक़द्दम कर ले। दर्म हर हालत में मुक़द्दम रहना चाहिए। हर अहमदी को हमेशा याद रखना चाहिए कि हर अहमदी के चेहरे के पीछे अहमदियत का चेहरा है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चेहरा है, इस्लाम का चेहरा है। अत: हर अहमदी की ज़िम्मेदारी है कि इन चेहरों की हिफ़ाज़त करे और जिन को अल्लाह तआला ने धर्म की ख़िदमत की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई है और मौक़ा दिया है उनकी ज़्यादा बड़ी ज़िम्मेदारी है कि इस ज़िम्मेदारी को निभाएँ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस उपदेश को हमेशा सामने रखें कि हमारी बैअत का दावा कर के फिर हमें बदनाम ना करें।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात, जिल्द 10, पृष्ठ 137)

अत: इस उपदेश को हमेशा अपने सामने रखना चाहिए। इस से कोई ये ना समझे कि यह सिर्फ़ ओहदेदारों के लिए है और बाक़ी इस से बरी हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हर शख़्स जो आपकी बैअत में शामिल है उसे यह फ़रमाया है, इसलिए हमें अपनी कथनी तथा करनी में कभी अन्तर नहीं रखना चाहिए वर्ना हमारी बैअत के दावे, जैसा कि मैंने पहले भी कहा था ,खोखले दावे हैं और जलसा में शामिल होने सिर्फ़ दुनियादारी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ इस वक़्त मैं पेश करता हूँ जिससे आप के दर्द का इज़हार होता है जो आप के दिल में अपने मानने वालों के लिए है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"मैं दुआ करता हूँ और जब तक मुझ में ज़िन्दगी का दम है किए जाऊँगा और दुआ यही है कि ख़ुदा तआला मेरी इस जमाअत के दिलों को पाक करे और अपनी रहमत का हाथ लंबा कर के उनके दिल अपनी तरफ़ फेर दे और सारी शरारतें और द्वेष उनके दिलों से उठा दे और आपसी सच्ची मुहब्बत प्रदान कर दे और मैं यक़ीन रखता हूँ कि यह दुआ किसी वक़्त क़बूल होगी और ख़ुदा मेरी दुआओं को नष्ट नहीं करेगा अल्लाह तआला से हमें यह दुआ करनी चाहिए कि यह दुआ हमारे हक़ में पूरी हो। हमारी नस्लों के हक़ में पूरी हो और क़यामत तक हमारी नस्लें भी इस दुआ से फ़ैज़ उठाती चली जाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआ की क़बूलीयत के लिए हमें व्यावहारिक कोशिश भी करनी होगी। अपनी हालतों को भी कोशिश कर के बदलना होगा और दिल के दर्द से दुआ भी करनी होगी। अल्लाह तआला हमें उस की तौफ़ीक़ भी प्रदान फ़रमाए।

इस दुआ के अगले हिस्से में आपने यह भी दुआ की है जिसके हमारे हक़ में क़बूल ना होने के लिए हमें दुआ करनी चाहिए जिसमें आपने फ़रमाया कि हाँ मैं यह भी दुआ करता हूँ कि अगर कोई शख़्स मेरी जमाअत में ख़ुदा तआला के इल्म और इरादा में चिरस्थायी बदबख़्त है जिसके लिए यह मुक़द्दर ही नहीं कि सच्ची पाकीज़गी और ख़ुदा तआला का भय उस को हासिल हो तो इस को हे क़ादिर ख़ुदा! मेरी तरफ़ से भी फेर दे जैसा कि वह तेरी तरफ़ से फेरा है और इस की जगह कोई और ला जिसका दिल नर्म और जिसकी जान में तेरी तलब हो।

(शहादतुल क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन, जिल्द 6 ,पृष्ठ 398)

अल्लाह तआला हमें ऐसी हालत से बचाए जिस में हम ख़ुदा तआला और इस के भेजे हुए अलग होने वाले हों। हमारे ईमानों को हमेशा सलामत रखे बल्कि इस में इज़ाफ़ा करता चला जाए और हम इन सारी दुआओं के हासिल करने वाले बनें जो आपने अपने मानने वालों के लिए और उनके हक़ में की हैं।

जलसा के बरकतों और हर किस्म के बुराई से महफ़ूज़ रहने के लिए भी इन दिनों में दुआएं करते रहें और सावधान भी रहें। दाएं बाएं नज़र भी रखें। अल्लाह तआला हर शरारत करने वाले की शरारत, हर हासिद के हसद से हमें बचाता रहे

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 31 मई 2019 ई पृष्ठ 5-10)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

यह मस्जिद एक हाईवे के ऊपर स्थित है जहां दैनिक गुज़रने वाली लगभग 35 हज़ार गाड़ियों के मुसाफ़िर इस मस्जिद को देखते हैं। इस मस्जिद के बाहरी सेहन में एक सौ से अधिक गाड़ियों की पार्किंग भी मौजूद है।

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर

मस्जिद बैतुल समद के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद के बाहरी सेहन में निम्नलिखित दो औरतों की नमाज़ जनाज़ा हाज़िर पढ़ाई और उनके पीछे रहने वालों से ताज़ियत फ़रमाई:

(1) आदरणीया सिद्दीक़ा समीअ साहिबा आफ़ सेंट्रल वर्जीनिया। उनकी वफ़ात 17 अक्तूबर को हुई। इन्न लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। आप तुफ़ैल मलिक साहिब की बेटी थीं जिन्हें हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह के हाथ पर बैअत करने का शरफ़ प्रदान हुआ। मरहूमा की शादी मेजर (रिटायर्ड) अब्दुल समी साहिब मरहूम के साथ हुई जो हज़रत मुंशी इस्माईल साहिब स्यालकोटी रज़ि के पोते थे। मरहूमा ख़िलाफ़त से मुहब्बत करने वाली और नमाज़ों की पाबंद नेक औरत थीं। मरहूमा ने अपने पीछे तीन बेटे और दो बेटियां यादगार छोड़ी हैं।

(2) आदरणीया कौसर पाल साहिबा आफ़ सेंट्रल वर्जीनिया। उनकी वफ़ात 18 अक्तूबर 2018 ई को हुई। आप मंसूर अहमद पाल साहिब मरहूम की पत्नी थीं। पिछले छ: महीने से बीमार थीं। मरहूमा मूसिया थीं और उनका जमाअत से गहरा सम्बन्ध था। आपके बेटे फ़ोज़ान पाल साहिब स्थानीय जमाअत में बतौर जनरल सेक्रेटरी और ज़ईम मजलिस अंसारुल्लाह की सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। आपकी एक बेटी दुर्दाना इक़बाल साहिबा भी हैं।

नमाज़ जनाज़ा की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद में तशरीफ़ ले आए और नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लजना के हाल में तशरीफ़ ले गए जहां औरतों को दर्शन के सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद के बाहरी सेहन में एक पौधा लगाया। इस के बाद मजलिस आमला जमाअत बाल्टीमोर, मजलिस आमला अंसारुल्लाह और मजलिस आमला ख़ुद्दामुल अहमिदया बाल्टीमोर ने अलग अलग हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया।

औरतों की संख्या ज़्यादा होने के कारण पार्किंग क्षेत्र में औरतों के लिए एक मार्की लगाई गई थी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दया करते हुए इस मार्की में भी तशरीफ़ ले गए। औरतों ने नारे बुलंद किए और अपने प्यारे आक़ा के दर्शन से फ़ैज़याब हुईं। इस के बाद 3 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद बैतुल समद का उद्घाटन आयोजन

प्रोग्राम के अनुसार शाम 5 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए और Hilton Hotel बाल्टीमोर के लिए रवानगी हुई जहां मस्जिद बैतुल समद के उद्घाटन के बारे में से एक आयोजन का एहतिमाम किया गया था। पुलिस की पाँच गाड़ियों ने क़ाफ़िला को escort किया। पाँच बज कर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की होटल लाए।

प्रैस कान्फ्रैंस

प्रोग्राम के अनुसार पाँच बज कर पैंतालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कान्फ्रैंस रुम में तशरीफ़ लाए, जहां प्रैस कान्फ्रैंस का आयोजन हुआ। इस प्रैस कान्फ्रैंस में (RNS) Religious News Service के तीन पत्रकार और प्रतिनिधि Jack Jenkins, Aysha Khan और Tom Gallagher मौजूद थे। इस के अतिरिक्त Steiner Radio Show के प्रतिनिधि और पत्रकार Marc Steiner भी शामिल थे। (NPR) National Public Radio के पत्रकार और प्रतिनिधि Jerome Socolovsky भी इन में शामिल थे।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि अब अमरीका में मिड्टरम वोट होने जा रहे हैं। आप विभिन्न सियासतदानों से भी मिलते हैं । क्या आपका इन वोटों के बारे में से अपनी जमाअत के लिए या यू एस ए के लिए कोई पैग़ाम है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि सियासत के बारे में से कभी भी मैं खोजबीन करने वाला नहीं रहा। लेकिन यूके का शहरी होने के लिहाज़ से मैं अपना वोट कासट करता हूँ। जमाअत के लिए तो यही पैग़ाम है कि हमेशा यह कोशिश करें कि ऐसे लोगों को मुंतख़ब करें जिनमें विनम्रता हो और जो अपने इंतिख़ाबी क्षेत्र में सेवा का भावना रखते हूँ। यह वह पैग़ाम है जो क़ुरआन करीम ने हमें दिया है कि ऐसे लोगों का इंतिख़ाब करो जो बेहतर अंदाज़ में तुम्हारी सेवा कर सकते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि क़ौम का सरदार क़ौम का ख़ादिम होता है। तो हम तो उसी को मुंतख़ब करने की कोशिश करते हैं जो क़ौम की बेहतर रंग में सेवा कर सकता है या जिसे हम समझते हैं कि वो बेहतर सेवा करेगा।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि जमाअत अहमदिया यू एस ए में और अन्य देशों में स्थापित अहमदिया जमाअतों में क्या बड़ा फ़र्क़ है? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम अहमदी हर जगह एक जैसे हैं। जो अहमदी होता है आप उस के अख़लाक़ तथा आदतों में शीघ्र एक तबदीली देखते हैं और कुछ में तो हैरतवाला इन्क़िलाब आ जाता है। इसी वजह से मैं हमेशा कहता हूँ कि अहमदियों की सोच, उनकी फ़िक्र, उनका नुक़्ता-ए-नज़र हर जगह एक सा है चाहे वे यू एस ए में हों या नॉर्थ अमरीका , साऊथ अमरीका यूरोप, यू.के या एशिया या अरब देशों या अफ़्रीक़ा में हों। यह इसलिए है कि हम इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं पर अनुकरण करते हैं। जैसा कि देश की सेवा करना, क़ानून की पाबंदी करना और देश से वफ़ादारी और सबसे बढ़कर हमेशा यह सोच रखना कि अल्लाह तआला हर समय देख रहा है जो भी वे कर रहे हैं, जो भी उनके कर्म हैं, अल्लाह तआला उन्हें देख रहा है। अगर यह विशेषताऐं लोगों में होंगी तो उनका स्तर एक जैसा ही होगा।

*एक पत्रकार ने निवेदन किया कि मेरा सवाल फ़ौज से बारे में है। मैंने अहमदी और अन्य मुसलमान फ़ौज में देखे हैं। उनमें से अक्सर मुस्लिम कम्यूनिटी और ग़ैर मुस्लिम कम्यूनिटी में सम्बन्धों को बढ़ाने की कोशिश करते हैं। क्या आप समझते हैं कि ऐसे लोग जिन्होंने फ़ौज में सेवा की हुई है वे ज़्यादा आगे आएं और आने वाली रुकावटों को दूर करने की कोशिश करें। इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि असल बात यह है कि देश का शहरी होने के नाते सबसे पहली ज़िम्मेदारी देश से वफ़ादारी है। इस्लाम कहता है कि हर शख़्स अपने देश से मुख़लिस हो। तो सिर्फ फ़ौज में ही नहीं अन्य ज़िन्दगी के विभागों से सम्बन्ध रखने वाले भी बहुत से ऐसे लोग हैं जो मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों में आने वाली रुकावटें दूर करने की कोशिश करते हैं। जैसा कि मेरा तो फ़ौज से कोई सम्बन्ध नहीं है मैं भी यह कोशिश कर रहा हूँ और अन्य जमाअत के लोग भी करते हैं।

अगर आप इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं पर अनुकरण कर रहे हैं तो इस्लाम कहता है कि एक दूसरे से आपसी प्यार, मुहब्बत और आपसी मुहब्बत को बढ़ावा देते हुए ज़िन्दगी बसर करो। धर्म में कोई जबर नहीं है। एक दूसरे के मज़हब का सम्मान करो। यह इस्लाम की शिक्षा है। इस बारे में से इस क़दर ताकीद है कि क़ुरआन करीम में आता है कि अन्य धर्मों के बुतों को भी बुरा भला ना कहो, क्योंकि वे प्रतिक्रिया में अल्लाह तआला की ज़ात के बारे में से भी कुछ बुरा भला कहेंगे और उसकी वजह से समाज में बेचैनी फैलेगी। तो यह तो इस्लाम की बुनियादी शिक्षा का हिस्सा है कि समाज में आपसी मुहब्बत की फ़िज़ा स्थापित करो। इन्सानियत और इन्सानी इक़दार को सब से पहले तर्जीह हो।

हम सब अपने ख़ुदा की शिक्षाओं को फैलाने वाले हैं। अल्लाह तआला सारे विश्वों को रिज़्क़ उपलब्ध करने वाला है। स से हट कर के कि आपका मज़हब किया है, मुसलमान हैं या यहूदी हैं या ईसाई हैं या हिंदू हैं या ला मज़हब हैं या नास्तिक हैं, सबकी अल्लाह तआला परवरिश कर रहा है। जब अल्लाह तआला ही सब का रब है तो फिर क्या वजह है कि इस की सृष्टि आपस में लड़े। तो इस बारे में सिर्फ फ़ौज में सेवा करने वालों को ही नहीं बल्कि बतौर मुसलमान प्रत्येक को कोशिश करनी चाहिए।

*एक पत्रकार ने सवाल किया कि क्या आप परेशान होते हैं जब अन्य मुसलमान आपको ग़ैर मुस्लिम कहते हैं? इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: यह तो ईमान का मामला है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक पेशगोई है कि आख़री ज़माना में एक शख़्स मबऊस होगा जो इस्लाम को दोबारा ज़िन्दा करेगा। इस अन्धकार वाले दौर में इस्लाम और क़ुरआन करीम की शिक्षाएं तो होंगी लेकिन मुसलमान वास्तविक शिक्षाओं से दूर हट जाऐंगे और उन शिक्षाओं से अपने अपने अर्थ निकालेंगे। तो ऐसे दौर

में एक सुधारक पैदा होगा और वह मसीह मौऊद और महदी माहूद होगा। हम यक़ीन रखते हैं कि यह पेशगोई जमाअत अहमदिया के संस्थापक अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहि अलैहिस्सलाम के वजूद में पूरी हो चुकी है। लेकिन अन्य मुसलमान उस का इन्कार करते हैं। वे यह कहते हैं कि जब ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से नाज़िल होंगे तब उनके बाद महदी आएगा और फिर यह दोनों मिलकर इस्लाम के ज़िन्दा करने के लिए काम करेंगे। फिर वे कहते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं आएगा। जबकि हम ईमान रखते हैं कि अधीन नबी आ सकता है, हां नई शरीयत वाला नबी नहीं आ सकता। क़ुरआन करीम शरीयत की आख़री किताब है। ऐसा नबी आ सकता है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कामिल इत्तिबा में आए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं को आगे बढ़ाए। फिर अन्य मुसलमान यह यक़ीन रखते हैं कि जब ईसा अलैहिस्सलाम नाज़िल होंगे तो वह नबी होंगे, क्योंकि नबी का टाइटल ईसा अलैहिस्सलाम के पास पहले ही है, वह तो नहीं छिन सकता। एक तरफ़ तो वह यह कहते हैं कि नबी नहीं आ सकता और अपने अक़ीदा की दृष्टि से वे एक नबी का ही इंतिज़ार कर रहे हैं, लेकिन जमाअत अहमदिया के संस्थापक को वे नबी मानने के लिए तय्यार नहीं हैं। तो यह अक़ीदा का फ़र्क़ है जो उनकी चिन्ता का कारण है। अब यह बजाय इसके कि मसीह के दोबारा आने और महदी की आने की बातें करें, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़त्म नबुव्वत के बारे में लोगों को इश्तिआल दिला रहे हैं। यह कह रहे हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी नहीं आ सकता और चूँकि अहमदी अपने संस्थारक को नबी कहते हैं इसलिए यह ग़ैर मुस्लिम हैं, काफ़िर हैं और मुर्तद हैं। चूँकि अहमदी इर्तिदाद के मुर्तक़िब हैं लिहाज़ा उनकी सज़ा क़तल होनी चाहिए, उनके सिर क़लम कर देने चाहिऐं, जो कि उनकी नज़र में एक मुर्तद की सज़ा है।

जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि हमें इस विरोध से कोई परेशानी है। हरगिज़ नहीं। हम तो दिन-ब-दिन तरक़्क़ी कर रहे हैं। उनके गिरोह से लोग निकल निकल कर जमाअत में दाख़िल हो रहे हैं। हर साल हमारी जमाअत में लाखों लोगों का इज़ाफ़ा हो रहा है। हम एक मज़हबी जमाअत हैं, हम यक़ीन रखते हैं कि एक दिन आएगा कि हम लोगों के दिल जीत लेंगे और इंशा अल्लाह अक़ल्लीयत से अक्सरीयत में आ जाऐंगे।

*एक सवाल यह किया गया कि लोगों के मध्य अमन और मुहब्बत की फ़िज़ा स्थापित करने के लिए आप अहमदिया मुस्लिम जमाअत का क्या रोल देख रहे हैं? इस बारे में से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि: हम तो इस्लाम की वास्तविक शिक्षाएं पेश करने की कोशिश कर रहे हैं और इस्लाम का अर्थ ही अमन, मुहब्बत और आपसी मुहब्बत है। हम हर जगह अमन फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। विभिन्न प्रोग्राम आयोजित कर रहे हैं, प्रैस कान्फ्रैंसज़, सैमीनारज़, सिंपोज़ियम इत्यादि आयोजित कर रहे हैं और अन्य धर्मों के मानने वालों को भी साथ शामिल कर रहे हैं। इस का मक़सद यही है कि हम इस दुनिया में अमन और मुहब्बत की फ़िज़ा स्थापित करें। मैं भी इसी मक़सद से विभिन्न देशों में जाता हूँ। मैं ख़ुद भी लैक्चरज़ और तक़रीरें करता हूँ और वास्तविक इस्लामी शिक्षाओं का बताता हूँ, ऐसी शिक्षाओं जिनके द्वारा अमन तथा आपसी मुहब्बत की स्थापना मुम्किन हो सकता है। मैं समझता हूँ कि एक सच्चे मुसलमान में बर्दाश्त की ताकत का स्तर बहुत बुलंद होना चाहिए और हम इसी तरीके पर अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं।

(यह प्रैस कान्फ्रैंस 6 बजकर 5 मिनट तक जारी रही)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ज़ के साथ सैनेटर Hon. Ben Cardin की मुलाक़ात

इस के बाद मेरीलैंड के एक सैनेटर Hon. Ben Cardin ने जो आज के इस प्रोग्राम में शिरकत के लिए आए हुए थे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की। महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को ख़ुश-आमदीद कहा और कहा कि हम आपकी बहुत इज़्ज़त करते हैं। आपकी इंटरनेशनल लीडर शिप का सम्मान करते हैं। आपने खासतौर पर आज़ादी के बारे में से हुक़ूक़ दिलवाने के लिहाज़ से और विभिन्न तन्ज़ीमों के मध्य सम्बन्ध बढ़ाने के लिहाज़ से बहुत बड़ी लीडरशिप दिखाई है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: यही इस दौर का सबसे बड़ा मसला है और हम तेज़ी से तबाही की तरफ़ जा रहे हैं, बजाय इस के कि हम अमन और मुहब्बत को फैलाईं।

सैनेटर साहिब ने निवेदन किया कि आजकल बहुत सी समस्याऐ हैं, सऊदी अरब के पत्रकार का क़त्ल है, यमन, सीरिया का मसला है,वैनज़ुवेला का मसला है। इन सब बातों से अमन ख़राब हो रहा है। इस वजह से हुज़ूर के अमन के पैग़ाम की बहुत ज़रूरत है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: यह बहुत अफ़सोस की बात है कि मुसलमान ही मुसलमान को मार रहा है और बिना सोचे समझे आपस में लड़ते जा रहे हैं। बच्चों को भी मारा जा रहा है। बहुत तकलीफ़ होती है यह सारे हालात देखकर। अमरीका एक बड़ी ताक़त है, अमरीका को अमन के बारे में से और इन्सानियत की सेवा के बारे में से अपनी भूमिका अदा करना चाहिए।

इस पर सैनेटर महोदय ने कहा कि मैं हुज़ूर अनवर से हज़ार प्रतिशत सहमत हूँ। इसी तरह महोदय ने कहा कि हुज़ूर का पैग़ाम बड़ा पावरफुल है। आप जैसी व्यक्तित्व की हम बाल्टीमोर में पहली बार मेज़बानी कर रहे हैं। हम हुज़ूर के शुक्रगुज़ार हैं कि आप यहां आए और आपने यहां मस्जिद की बुनियाद रखी है और इस का उद्घाटन किया है। यहां आपकी बहुत अच्छी कम्यूनिटी है। हमें इस से बहुत ख़ुशी है।

आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: हम सब हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के मज़हब के अनुयायी हैं और आपको मानने वाले हैं। ईसाई हों, यहूदी हों या मुसलमान हों, अगर इस बात को समझ लिया जाए तो फिर दुनिया में अमन स्थापित हो सकता है। आख़िर पर सैनेटर साहिब ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाई। सैनेटर साहिब की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ यह मुलाक़ात छ: बज कर पंद्रह मिनट पर ख़त्म हुई।

बाल्टीमोर के अन्य सम्मान्नीयों की मुलाक़ात

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ होटल के एक मीटिंग रुम में तशरीफ़ ले आए जो Blake Room के नाम से जाना जाता है। यहां निम्नलिखित शख़्सियात ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

Hon.Catherine Pugh (मेयर आफ़ बाल्टीमोर)
Jill Carter (मेरी लैंड स्टेट सैनेटर)
James Mathias(मेरी लैंड स्टेट सैनेटर)
Pamela Beidle (मैंबर मेरी लैंड हाऊस आफ़ Delegates)
Marilyn Mosby (स्टेट अटार्नी फ़ार बाल्टीमोर)
John Wobensmith (सेक्रेटरी आफ़ स्टेट मेरी लैंड)
Vicki Almond(कौंसल वूमन बाल्टीमोर काओनटी)
NickMosby(कौंसल मैन बाल्टीमोर सिटी)
Brent Howard (प्रैज़ीडैंट चैंबर आफ़ कॉमर्स)
Hon.Michael Adamo (देश गीबोन के एंबेसडर)
कीनीया के एंबेसडर के प्रतिनिधि जो एंबेसी में इकनॉमिक कौंसिलर हैं
Mustapha Sosseh (स्टेट एंबेसडर गीमबया)
Fred Guy (डायरेक्टर आफ़ यूनीवर्सिटी आफ़ बाल्टीमोर फ़िलोसफ़ी डिपार्टमैंट)
Major Travis Hord (कमांडिंग ऑफीसर यू एस ए Marines)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

दुआ का इच्छुक

Sohail Ahmad Nasir and famil

jamaat Ahmadiyya idra,Dist: Proliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

Colonel Jones (बाल्टीमोर काओनटी पुलिस)
Gary Tuggle (कमिशनर बाल्टीमोर सिटी पुलिस)
Father Joseph Muth (पासटर आफ़ St.Matthews चर्च)
Rabbi Andy (बाल्टीमोर Hebrew Congregation)
Christine Spencer (Dean of Yale Gardon School of Arts बाल्टीमोर यूनीवर्सिटी)
Anthony Day (प्रैज़ीडैंट आफ़ Loyala हाई स्कूल)
Natalie Eddington (Dean University of Marand School of Pharmacy)

इन मेहमानों से मुलाक़ात के आरम्भ में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि: आप सब का यहां आने का बहुत शुक्रिया। आप लोगों ने हमारे प्रोग्राम के लिए अपनी व्यस्तता में से वक़्त निकाला है। विशेष रूप से आज आप लोगों की छुट्टी भी है और अपनी फ़ैमिलीज़ के साथ वक़्त गुज़ारने के स्थान पर आप यहां आए हैं।

इस पर एक औरत मेहमान ने निवेदन की कि यह हमारी ख़ुशक़िसमती है कि आप यहां तशरीफ़ लाए हैं।

एक मेहमान ने कहा कि आपका अमन का पैग़ाम, दूरियाँ ख़त्म करने का पैग़ाम ऐसा है कि इस की बहुत ज़रूरत है। हमारे लिए यह बहुत सम्मान की बात है कि आप यहां हमारे शहर तशरीफ़ लाए हैं। हम आपको यू एस ए आने पर ख़ुश-आमदीद कहते हैं और आपका शुक्रिया अदा करते हैं। आपकी मौजूदगी हमारे लिए बहुत अहम है। आपने जो आपसी एकता तथा मुहब्बत का पैग़ाम दिया है यह हमारे लिए बहुत ही क़ीमती सरमाया है।

मेयर बाल्टीमोर सिटी ने निवेदन की कि मैं बाल्टीमोर के सारी नागरिकों की तरफ़ से हुज़ूर अनवर का शुक्रिया अदा करती हूँ। मेयर ने निवेदन किया कि हम जिस समय से गुज़र रहे हैं, इस में इस पैग़ाम की बहुत महत्व है। मैं इस से बहुत प्रभावित हुई हैं और चाहती हैं कि दुनिया में हर जगह इस पैग़ाम पर अनुकरण किया जाए ताकि दुनिया अमन का गहवारा बन सके। मुझे बहुत ख़ुशी है कि आप यहां तशरीफ़ लाए हैं और उम्मीद करती हूँ कि जो लोग यहां आए हैं आपका पैग़ाम लेकर जाएं और इस पर अनुकरण करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने उनका शुक्रिया अदा किया। इसी तरह फ़रमाया कि यह वक़्त की ज़रूरत है कि हम समाज में अमन स्थापित करें और आपसी सहमति तथा एकता से मुहब्बत की फ़िज़ा स्थापित करें। अगर दुनिया इस पैग़ाम को समझ जाए तो दुनिया तो बहुत ख़ूबसूरत है। फिर यह बात भी बहुत अहम है कि हम सब अपने सृष्टा को पहचानें क्योंकि हम एक ही रहमान ख़ुदा की सृष्टि हैं और इस की सृष्टि होने के नाते हमें आपसी मुहब्बत से रहना चाहिए। अगर यह पैग़ाम समझ लिया जाए तो जैसा कि मैंने कहा है, सब कुछ ठीक हो जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मेयर से बाल्टीमोर के विभिन्न डिस्ट्रिकस के बारे में से पूछा।

मेयर ने निवेदन की कि वह मेयर के अतिरिक्त सिटी कौंसल के सदर हैं। इसी तरह बाल्टीमोर के 14 सिटी डिस्ट्रिक्टस हैं और उन सारे के प्रतिनिधि कौंसल का हिस्सा हैं। मेयर ने अपने साथ आई हुई एक अस्सिटैंट का भी परिचय करवाया। यह अमन के स्थापना के लिए मेयर के साथ मिलकर काम कर रही हैं।

उन्होंने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का शुक्रिया अदा किया और निवेदन किया कि हुज़ूर मेरे ख़्याल में हम आजकल जो जंग लड़ रहे हैं यह एक ऐसा युद्ध है जिस पर सारी नकारात्मक ताक़तें नौजवान नस्ल पर हमला कर रही हैं। हमें इस बारे में से नौजवान नस्ल पर ध्यान की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। हमारे हाँ पिछले दो सालों की तुलना में दोगुनी संख्या में नौजवानों में क़तल या क़तल की कोशिश के मुक़द्दमे दर्ज हुए हैं। हमें नौजवान नस्ल पर ध्यान की बहुत ज़रूरत है। मैं आपका बहुत शुक्रिया अदा करती हूँ। यह मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है कि मैं आपसे मिल सकी हूँ और आपकी बातें सन सकी हूँ।

हुज़ूर अनवर ने पूछा कि इस बढ़ते हुए रुझान की वजह किया है? इस पर महोदया ने निवेदन किया कि जहां तक मैंने जायज़ा लिया है हमारे बाल्टीमोर शहर में इस तरह की घटनाएं नौजवानों में मायूसी (frustration) बढ़ने की वजह से हो रहे हैं। नौजवानों में निराशा है। बाल्टीमोर की 24 प्रतिशत आबादी ग़ुर्बत में ज़िन्दगी बसर कर रही है। मआशी अवस्था इस की एक वजह है। बेरोज़गारी बढ़ रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि क्या बे रोज़गारों के लिए कोई सोशल मदद का निज़ाम राइज है? इस पर मेयर ने जवाब देते हुए कहा कि हमें यहां बहुत से चैलेंजिज़ का सामना है। हम बच्चों के बारे में से उनकी शिक्षा पर काफ़ी ज़ोर दे रहे हैं। छात्रों में ड्रग्ज़ के रुझानात के बारे में से भी काफ़ी काम की ज़रूरत है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: तो फिर ड्रग समस्या है,शिक्षा के मसले हैं, मआशी मसलें हैं, बेरोज़गारी है। इसी तरह फ़रमाया कि सोशल मीडिया भी बेचैनी बढ़ाने में एक अहम भूमिका अदा कर रहा है। फ़ैमिली स्ट्रक्चर प्रभावित हो रहा है, हर कोई अपने मोबाइल फ़ोन पर व्यस्त रहता है।

कीनिया की एंबेसी से इकनॉमिक कौंसिलर भी आए हुए थे। उन्होंने अपना परिचय करवाया । हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने उनका शुक्रिया अदा किया।

एक मेहमान ने अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह कहा अल्लाह कहा और निवेदन की कि सारी मुसलमान कम्यूनिटी की तरफ से मैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को ख़ुश-आमदीद कहता हूँ। मेरा अहमदिया मुस्लिम जमाअत के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है और इसी वजह से मैं यहां आया हूँ। आप लोगों का माटो मुहब्बत सब के लिए। नफ़रत किसी से नहीं बहुत शानदार है। ऐसे दौर में जिस से हम गुज़र रहे हैं, इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि कोई अहले सुन्त वल जमाअत से सम्बन्ध रखता है, अहमदी है या शीया है। हम सब मुसलमान एक हैं। इस मेहमान ने पारसियों की मदद करने के बारे में से अपनी कोशिशों का भी ज़िक्र किया और कहा कि मैंने उनकी मदद मुआशरती एकता की लिए की और इसलिए कि उनके साथ ज़्यादती हो रही थी। यहां इस बात की ज़रूरत है कि हम आपस में एक हो जाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: सिर्फ़ यहां नहीं, बल्कि सारी दुनिया में ही इस एकता की ज़रूरत है। मुसलमान होने के नाते हम सबको एक होना चाहिए। हम सब एक रहमान ख़ुदा पर ईमान रखते हैं। हमारा रसूल और किताब एक है। क़ुरआन करीम तो अन्य धर्मों के बारे में यह कहता है कि: अहले किताब से कह दो कि साझी बात पर इकट्ठे हो जाएं कि सब एक ख़ुदा के मानने वाले हैं। तो अगर हम इस एक साझा प्वाईंट को समझ जाएं तो कहीं भी कोई भेदभाव, कोई नफ़रत, कोई मतभेद ना हो और हम सब मिलकर अमन से रहें और आपस में मिलकर अपनी आइन्दा आने वाली नस्लों की बेहतरी के लिए काम करें। हमने अपना काम कर लिया है, अब हमें देखना चाहिए कि हम अपनी नस्लों की बेहतरी के लिए क्या कर सकते हैं ताकि वे हमें अच्छी यादों के साथ ज़िन्दा रखें। यह ना कहने वाले हों कि यह वे लोग थे, जिन्होंने हमें हलाकत तक पहुंचाया।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि हुज़ूर में कुछ और मसलों की तरफ़ भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ और वे घरेलू तशद्दुद और इन्सानी स्मगलिंग के मसले हैं। पिछले दिनों में दो ऐसे प्रभावित होने वालों से बात कर रहा था जो एक लंबा समय उन मसलों का सामना करते रहे हैं और उनकी बातों में जिस बात ने मुझे ज़्यादा प्रभावित

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

क्या वे यह थी कि वो दोनों कहते हैं कि जिस चीज़ ने उन्हें इन सख़्त हालात में भी उम्मीद दिए रखी वे ख़ुदा की ज़ात थी। उनका कहना था कि वे इसी ईमान पर ज़िन्दा थे और उम्मीद से भरे हुए थे कि हालात तबदील होंगे।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि बतौर एजूकेटर मैं समझता हूँ कि हमें अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा देनी होगी। 11 साल से लेकर 18 साल तक के बच्चों पर विशेष ध्यान देना होगी। हमें उन्हें एतिमाद देना है और ऐसे रोल मॉडलज़ देने हैं जैसा कि यहां इस मेज़ के गिर्द लोग बैठे हैं। अगर हम यह करने में कामयाब हो जाते हैं तो मैं समझता हूँ कि बाल्टीमोर तबदील हो जाएगा। मेयर की तरफ़ से जो काम यहां हुए हैं मैं समझता हूँ कि वे काफ़ी हौसला बढ़ाने वाले हैं। हमें नौजवानों पर ध्यान देना है और उन्हें वापस लाना है। नौजवानों की बेहतर तर्बीयत काफ़ी मसलों का हल है।

प्रोग्राम के आख़िर पर बाल्टीमोर की मेयर ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में एक तोहफ़ा पेश किया और निवेदन किया कि यह बाल्टीमोर की जनता की तरफ़ से आप के लिए यादगार है। आपके आने और अमन के पैग़ाम का बहुत शुक्रिया।

इस के बाद मेयर ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से भी तोहफ़ा वसूल करने का सौभाग्य पाया। मेयर ने इस प्रोग्राम के बाद बेघर लोगों के लिए आयोजित किए जाने वाले एक प्रोग्राम में शिरकत करनी थी। इस बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने पूछा कि बेघर लोगों के लिए आप लोग बजट का कितना प्रतिशत विशेष करते हैं। इस पर मेयर ने निवेदन की कि बेघर लोगों और अन्य सोशल सर्विसिज़ के लिए बीस से पच्चीस प्रतिशत बजट निर्धारित किया जाता है। इन गर्मियों में हमने 9 हज़ार नौजवानों को नौकरी मुहय्या की है।

मुलाक़ात का यह प्रोग्राम 6 बजकर 40 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ आयोजन के लिए हाल में तशरीफ़ ले आए।

मस्जिद बैतुलसमद बाल्टीमोर की उद्घाटनी आयोजन

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय सलमान तारिक़ साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला अमरीका ने की और इस का अंग्रेज़ी भाषा में अनुवाद पेश किया। इस के बाद नेशनल सेक्रेटरी उमूरे ख़ारिजा आदरणीय अमजद ख़ान साहिब ने अपना परिचयात्मक सम्बोधन पेश किया और आने वाले मेहमानों को ख़ुश-आमदीद कहा।

*इस के बाद सैनेटर Ben Cardin ने अपने सम्बोधन में कहा :सम्मान्नीय ख़लीफतुल मसीह! हम आपको बाल्टीमोर में ख़ुश-आमदीद कहते हैं, आपने तशरीफ़ ला कर हमारा इसम्मान बढ़ाया और हम आपके नेतृत्व से प्रभावित हैं। आपकी जमाअत मेरी लैंड, बाल्टीमोर अमरीका को और अधिक अमन वाला बनाने का कारण है। आपका नेतृत्व विश्वव्यापी है। अमन के स्थापना की आजकल जिस शिद्दत से ज़रूरत है वैसी ज़रूरत पहले कभी ना थी और आपने हमें बताया है कि हम बाल्टीमोर में इस मक़सद के लिए और अधिक अच्छा काम कर सकते हैं। मुझे गर्व है कि मैं मेरी लैंड बाल्टीमोर के लोगों की सैनेट में नुमाइंदगी करता हूँ और मेरे लिए सम्मान है कि मैं आपको इस महान शहर में ख़ुश-आमदीद कह रहा हूँ और बहुत उपकृत हूं कि आप अपनी विश्वव्यापी मसरुफ़ियात में से वक़्त निकाल कर यहां अमन और इन्सानियत के लिए उम्मीद का पैग़ाम लेकर तशरीफ़ लाए। अल्लाह तआला आप पर फ़ज़ल फ़रमाए। आमीन।

*इसके बाद John Robin Smith (जो मेरी लैंड के 71 वें सेक्रेटरी आफ़ स्टेट हैं) ने अपना सम्बोधन पेश करते हुए कहा: सम्मान्नीय ख़लीफतुल मसीह और सारे शामिल होने वाले मर्द तथा औरतों का बहुत बहुत शुक्रिया। गवर्नर और उनकी इंतिज़ामीया आप लोगों की यहां आने पर बहुत ख़ुश है और बहुत शुक्रिया कि आपने मुझे यहां बुलाया किया। मेरी लैंड स्टेट को गर्व है कि यह अहमदिया मुस्लिम जमाअत यू एस ए का हेडक्वार्टर है और यहां बाल्टीमोर में मस्जिद का उद्घाटन निसन्देह एक तारीख़ी अवसर है। मेरी लैंड एक विभिन्न कल्चरों की आबादी वाली रियासत है और यह तनव्वो हर तबक़ा में मौजूद है।

ख़लीफतुल मसीह के सफ़र का प्रोग्राम बेहद व्यस्त है और आप बहुत ही अहम पैग़ाम लेकर आए हैं जो इन्सानी आचरण को समझते हुए इन्सानियत की सेवा करना और अमन का स्थापना है और यह हमारे बहुत से मसलों के हल के लिए लाभदायक है। यह वह पैग़ाम है जो हम सब मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम क़बूल कर सकते हैं। मुझे देश में और देश के बाहर बहुत से लोगों से मिलने का इत्तिफ़ाक़ होता है और बहुत से कल्चरज़ को देखने का अवसर मिलता है जिस में मुझे बहुत कुछ सीखने का अवसर मिलता है। यहां बाल्टीमोर में बहुत से इंटरनेशनल मेहमानों को ख़ुश-आमदीद कहने का अवसर मिलता रहता है और मैं आप सब मेहमानों का शुक्रिया अदा करता हूँ। मैं ख़लीफतुल मसीह के दुनिया के महफ़ूज़ सफ़र के लिए दुआ करती हूँ, अल्लाह तआला आप पर अपना बहुत फ़ज़ल फ़रमाए।

मैं इस अवसर पर आपको गवर्नर की तरफ से जारी किए Governor Citation पेश करना चाहता हूँ। अत: महोदय ने अंग्रेज़ी ज़बान में तहरीर पढ़ कर सुनाई जिसका हिन्दी अनुवाद निम्नलिखित है:

ख़ुश-आमदीद! इस प्रान्त के बाशिंदों की तरफ़ से यह ऐलान किया जाता है।

बतौर सम्मान मस्जिद बैतुलसमद के उद्घाटन के अवसर पर, निहायत अदब और ख़ुशी के साथ निवेदन है। मेरी लैंड के बाशिंदे हमारे साथ मिलकर इस ख़ुशी के अवसर पर अपनी हार्दिक भावनाओं को प्रस्तुत करते हैं। इसी तरह मुबारकबाद पेश करते हुए हम यह गवर्नर साइटीशन पेश करते हैं।

20/अक्तूबर 2018 ई (दस्तख़त)

गवर्नर लारी होगन (लेफ़टन्नट गवर्नर बोइडरदरफ़ोरड) जान रॉबिन स्मिथ सेक्रेटरी आफ़ स्टेट

*उस के बाद आदरणीय साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब अमीर जमाअत यू एस ए ने संक्षिप्त रूप से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का परिचय करवाते हुए कहा: श्रोताओ! यह हमारे लिए बहुत सम्मान की बात है कि हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस जो कि हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहि अलैहिस्सलाम के पांचवें ख़लीफ़ा हैं, हमारे मध्य मौजूद हैं। मैं हुज़ूर अनवर से निवेदन करता हूँ कि तशरीफ़ लाएं और अपने ख़िताब से नवाज़ें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 7 बजे शुरू हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अंग्रेज़ी भाषा में ख़िताब फ़रमाया। इस का हिन्दी अनुवाद यहां पेश किया जा रहा है।

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना ख़िताब बिस्मिल्लाह हिर्रमानिर्हीम से शुरू किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकाताहो। अल्लाह तआला की रहमतें और बरकतें आप सब पर हूँ।

सबसे पहले मैं इन सारे मेहमानों का हार्दिक शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जो आज वक़्त निकाल कर हमारे साथ इस अवसर पर शामिल हो रहे हैं। ऐसी दुनिया में जहां मज़हब में दिलचस्पी पतनशील है, वहां आपका एक मज़हबी जमाअत के प्रोग्राम में शामिल होना सम्मान योग्य है। यह बात और भी महत्वपूर्ण है कि आप मुसलमानों के एक प्रोग्राम में शामिल हो रहे हैं, जहां एक मस्जिद का उद्घाटन हो रहा है, बावजूद उस के कि आप में से अक्सर ग़ैर मुस्लिम हैं और उनकी इस्लाम और मस्जिद के साथ कोई मज़हबी या भावनाओं से जुड़ाव नहीं है। निसन्देह आप सब इस बात से बख़ूबी आगाह हैं कि आजकल बहुत से लोग इस्लाम और मुसलमानों के बारे में ख़ौफ़ और शंकाओं में घिरे हुए हैं। इस सारे परिप्रेक्ष्य में आपकी यहां हाज़िरी प्रशंसा योग्य है और मुझे पाबंद करती है कि मैं आप सब का हार्दिक शुक्रिया अदा करूँ। इसी तरह मैं यह भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि शुक्रिया के यह भावनाएं सिर्फ़ मौखिक नहीं बल्कि इस्लाम मेरे पर यह मज़हबी फ़र्ज़ आइद करता है, जैसा कि इस्लाम के पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद ने हमें शिक्षा दी है कि जो लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता वह अल्लाह तआला का भी शुक्रगुज़ार नहीं हो सकता। इसलिए मैं यह अपना मज़हबी फ़रीज़ा समझता हूँ कि हार्दिक तौर पर श्रद्धा के साथ आपका शुक्रिया अदा करूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेरे ख़्याल में आप आज इस्लाम के बारे में और अधिक सीखने की उम्मीद और यह जानने के लिए तशरीफ़ लाए हैं कि हमने यह मस्जिद क्यों बनाई है। लोग इस्लाम के बारे में मीडिया में जो कुछ देखते और सुनते हैं, इस लिहाज़ से उन्हें ध्यान भी पैदा होता है कि इस्लाम के बारे में हक़ीक़त जानने की कोशिश करें। हम जिस माहौल में रह रहे हैं, इस में लोगों के ज़ेहनों में मस्जिद के बारे में कुछ भय या ख़ौफ़ है तो यह समझने की बात है। बेशक दुनिया में मुसलमानों के ख़ौफ़ का तास्सुर बढ़ रहा है। सामूहिक रूप से मुसलमानों को फ़साद पैदा करने वाला और मुसलमानों को ऐसी क़ौम समझा जाता है जो ना तो आपस में और ना ही दूसरों के साथ अमन से रह सकते हैं। फिर

मस्जिद की बुनियाद तो और भी ज़्यादा बेचैनी और ख़ौफ़ पैदा करती है। बहुत से लोग डरते हैं कि मस्जिद मुसलमानों को एक ऐसा मर्कज़ उपलब्ध करेगी जो उन्हें बाक़ी समाज से अलग कर देगी और स्थानीय आबादी, शहर और देश का अमन तथा शान्ति दाव पर लग जाएगी। मैंने ग़ैर मुस्लिम दुनिया में इन शंकाओं का ख़ुद देखा किया है। बदक़िस्मती से यह बेचैनी और शंकाए इस्लाम और इस के मानने वालों के बारे में निरन्तर बढ़ रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इन सारी बातों के बावजूद सच यह है और हमेशा यही रहेगा कि इस्लाम हर किस्म की शिद्दत पसंदी, दहशतगर्दी और तशद्दुद की साफ मनाही करता है। यह हर इस क़दम की सख़्ती से घृणा करता है जिससे आज़ादी मज़हब और आज़ादी ज़मीर प्रभावित होती है। इस्लाम किसी भी सूरत में मज़हब के मामला में किसी जबर और ज़बरदस्ती की इजाज़त नहीं देता बल्कि इस्लाम शिक्षा देता है कि मज़हब इन्सान के दिल का मामला है और यह क़ुरआन मजीद में लिखा हुआ है। इसलिए मेरा यह मज़बूत ईमान है कि ग़ैर मुस्लिमों के इस्लाम के बारे में जो शंकाए हैं , वे ग़लत फ़हमी पर आधारित हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: किसी भी मस्जिद बनाने के लिए ज़रूरी है कि इस्लामी शिक्षा के अनुसार उस की बुनियाद के उद्देश्यों को सामने रखा जाए। जब वास्तविक मुसलमान मस्जिद बनाते हैं तो उनका मक़सद क्या होता है। अगर कोई इन्सान न्याय की नज़र से देखे कि मस्जिद क्यों बनाई जाती है और क्या वजह है कि उसे मुसलमानों के लिए पवित्र समझा जाता है, तो वे इस नतीजा पर पहुँचेगा कि वास्तविक मस्जिद से डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसलिए अब स्थानीय लोगों में पैदा होने वाली किसी भी संभावित बेचैनी को कम करने के लिए मस्जिद के बुनियादी उद्देश्यों बयान करूँगा ताकि आपको मालूम हो कि यह मस्जिद और सारी वास्तविक मस्जिद किस चीज़ की निशानी हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मस्जिद बनाने का बुनियादी मक़सद निसन्देह एक ख़ुदा की इबादत है। इसलिए मस्जिद वे जगहें हैं जहां मुसलमान इकट्ठे होते हैं और अल्लाह के सामने झुकते हैं, सज्दा करते हैं और इस की इबादत करते हैं। ऐसी इबादत दिन में पाँच बार की जाती है और उसे नमाज़ कहते हैं। यह हर मुसलमान के ईमान का बुनियादी हिस्सा है जो उस के लिए करना वाजिब है। दूसरा अहम मक़सद मस्जिद का यह है कि एक ऐसी जगह जहां मुसलमान इकट्ठे हो कर इबादत कर सकें और आपस के सम्बन्ध को मज़बूत बनाते हुए समाज में एकता पैदा कर सकें। अत: मस्जिद के माध्यम से मुसलमान ज़्यादा आसानी से समाज में हुस्न-ए-सुलूक, हमदर्दी और भाईचारा की फ़िज़ा स्थापित कर सकते हैं। तीसरा अहम मक़सद किसी भी मस्जिद का यह है कि ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम की शिक्षाओं के बारे में आगाही दी जाए और सारे समाज के हुक़ूक़ अदा किए जाएं। यह मस्जिद एक प्लेटफार्म मुहय्या करती हैं ताकि मुसलमान मुत्तहिद हो कर अपनी स्थानीय आबादी की सेवा कर सकें और समाज के सारी लोगों की रंग तथा नस्ल के भेद के बिना मदद कर सकें।

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद की सूरा निसा आयत 37 में फ़रमाता है: और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को इस का साझी ना ठहराओ और माता पिता के साथ एहसान करो और क़रीबी रिश्तेदारों से भी और यतीमों से भी और मिस्कीन लोगों से भी और रिश्तेदार पड़ोसियों से भी और ग़ैर रिश्तादार पड़ोसियों से भी और अपने साथ बैठने वालों से भी और मुसाफ़िरों से भी और उनसे भी जिनके तुम्हारे दाहने हाथ मालिक हुए। निसन्देह अल्लाह उस को पसंद नहीं करता जो मुतकब्बिर (और) शेख़ी बघारने वाला हो।

इस आयत करीमा में क़ुरआन मजीद मुसलमानों को शिक्षा देता है कि सारे लोगों से हमदर्दी और दया का सुलूक किया जाए। इस्लाम मुसलमानों से कहता है कि वे माता पिता, घर वालों, अन्य रिश्तेदारों और समाज के बेकस लोगों की भी सेवा करें। क़ुरआन करीम पड़ोसी के हुक़ूक़ अदा करने पर भी बहुत ज़ोर देता है। पड़ोसी से सिर्फ वही लोगों मुराद नहीं हैं जो इन्सान के घर के साथ रहते हैं बल्कि इस्लाम में पड़ोसी का तसव्वुर बहुत व्यापक है। सिर्फ वे जो क़रीब या दूर रहते हैं इस में शामिल नहीं बल्कि पड़ोसी की प्रशंसा में इन्सान के वे साथी भी शामिल हैं जो उस के साथ काम करते हूँ, या इसके साथ सफ़र में हूँ, और वे भी शामिल हैं जिनका इसके साथ सम्बन्ध हो। इसलिए संक्षिप्त रूप से इस शहर के सारे लोग इस मस्जिद के पड़ोसी हैं। इसलिए वास्तविक मस्जिद बजाय समाज का अमन बर्बाद करने के विभिन्न वर्गों और धर्मों के लोगों के मध्य अमन को बढ़ावा देती हैं। मस्जिद जहां मुसलमानों के अपने सृष्टा के साथ सम्बन्ध को मज़बूत करती हैं वहां दूसरे लोगों के हुक़ूक़ अदा करने में भी सहायक हैं। वे मस्जिद किसी काम की नहीं हैं जो यह अहम उद्देश्यों पूरा नहीं करतीं, ऐसी मस्जिद इन खोखले शैलज़ की तरह हैं जो किसी काम नहीं आते।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हमारा इतिहास इस बात की गवाह है कि हम जब मस्जिद बनाते हैं तो उन उद्देश्यों को पूरा करने की कोशिश करते हैं मैंने ने अभी बयान किए हैं। हम अपने हुस्न सुलूक और नेक बरताओ से व्यावहारिक तौर पर यह ज़ाहिर करने की कोशिश करते हैं कि हम अपनी जमाअत के माटो मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं को ज़िन्दा रखे हुए हैं। हम अन्य मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों से सम्बन्ध मज़बूत करने की कोशिश करते हैं। हम विश्वव्यापी धर्मों की बातचीत को बढ़ावा देने की कोशिश करते हैं। हम अपने पड़ोसियों का सम्मान और उनका ख़्याल रखते हैं। हम हमेशा ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद के लिए तय्यार रहते हैं। हम कमज़ोरों और महरूमों के हुक़ूक़ अदा करते हैं। हम हर जगह समाज की सेवा के लिए तय्यार रहते हैं और वतन से मुहब्बत करने वाले शहरी हैं। यही हमारा मज़हब और शिक्षाएं हैं। इसी मक़सद के लिए हम मस्जिद बनाते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप सब लोग समझ गए होंगे कि मस्जिद कोई ऐसी जगह नहीं है जिससे डरा जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: वास्तविक मस्जिद सिर्फ़ ख़ुदा की इबादत की जगह ही नहीं बल्कि एक ऐसी जगह है जहां से वे इकट्ठे मिलकर समाज के अन्य लोगों के हुक़ूक़ अदा करते हैं। क़ुरआन मजीद की सूरा माओन की आयात 5 से 7 में बयान है कि: अत: इन नमाज़ पढ़ने वालों पर हलाकत हो जो अपनी नमाज़ से ग़ाफ़िल रहते हैं। वे लोग जो दिखावा करते हैं।

ये आयतें स्पष्ट तौर पर बयान करती हैं कि उन लोगों की नमाज़ें रद्द कर दी जाएँगी जो अल्लाह तआला की इबादत तो करते हैं मगर उसकी सृष्टि के हुक़ूक़ अदा नहीं करते। उनकी नमाज़ों और मस्जिद में हाज़िरी की कोई हक़ीक़त नहीं बल्कि वे सिर्फ एक दिखावा है। क़ुरआन मजीद ने बहुत स्पष्ट तौर पर बयान कर दिया है कि उनकी नमाज़ें बेमानी हैं और उनके मुनाफ़िक़ाना आदतों उन्हें सिर्फ ज़िल्लत तथा गिमराही में बढ़ाते हैं।

दरअसल हक़ीक़त यह है कि सच्चे मुसलमान जो मुख़लिस हो कर अल्लाह तआला की इबादत करते हैं वे कभी कोई ऐसा काम नहीं कर सकते जिससे समाज का लाभ या अमन ख़राब होता हो। ना ही वो दूसरों के हुक़ूक़ छीनने की कोशिश करते हैं क्योंकि ऐसा करने से उनका ईमान ख़राब होता है और ऐसा कर्म क़ुरआन करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं के विपरीत ठहरता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसलिए मैं आपको एक बार फिर यह यक़ीन दिलाना चाहता हूँ कि इस मस्जिद के बारे में आपको किसी भी किस्म की बेचैनी की ज़रूरत नहीं। इस मस्जिद के दरवाज़े हमेशा अमन पसंद लोगों के लिए खुले रहेंगे। यह हमेशा उन लोगों के लिए खुले रहेंगे जो इन्सानियत की क़दर करते हैं। मैं आपको पूर्ण विश्वास से कह सकता हूँ कि इन्शा अल्लाह यह मस्जिद अमन की निशानी बन कर उभरेगी और इस से जो प्यार, मुहब्बत, भाईचारा फूटेगा वह इस पूरे शहर बल्कि इस से भी आगे जाएगा। यह एक ऐसा मीनार बनेगी जो चारों तरफ रोशनी फैलाएगी। यह ऐसा अमन का स्थान होगा जहां इकट्ठे हो कर इबादत करने वाले अपने पड़ोसियों से हुस्न-ए-सुलूक करेंगे और उनके हुक़ूक़ अदा करेंगे। यह इस्लाम की रोशन शिक्षा को ज़ाहिर करेगी और सारे भयों और शंकाओं को दूर कर देगी जो हमारे मज़हब के बारे में पाए जाते हैं। इन्शा अल्लाह स्थानीय लोगों के दिलों में रह जानेवाले ख़ौफ़ सब दूर होजाएंगे जब वो इस मस्जिद को देखेंगे और लोगों से मिलेंगे जो यहां इबादत करेंगे तो वो जल्द समझ जाऐंगे कि किसी परेशानी और बेचैनी की ज़रूरत नहीं है। अगरचे यह दावे करना आसान है लेकिन जल्द ही आप मेरे इन दावों को ख़ुद प्रमाणिकता देंगे कि अहमदी मुसलमान वही करते हैं जिसकी वह तब्लीग़ करते हैं ओर वह इस्लाम की अमन वाली शिक्षा का सिर्फ दावा ही नहीं करते बल्कि उसे मुक़द्दम भी रखते हैं। मुझे यक़ीन है कि स्थानीय आबादी जल्द ही यह महसूस कर लेगी कि जो कुछ मैंने मस्जिद के उद्देश्यों के बारे में अभी बयान किया है वह कोई सुहाने सपने नहीं बल्कि पूर्ण सच्चाई है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस वक़्त मैं यह भी कहना चाहूँगा कि यह समाज के हर फ़र्द का फ़र्ज़ है, चाहे मुसलमान हो या ग़ैरमुस्लिम, मज़हबी हो या ग़ैर मज़हबी कि दुनिया की भलाई तथा तरक्की और

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 8 August 2019 Issue No. 32

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

अमन के लिए मिलजुल कर काम करें। एक दूसरे पर आरोप लगाने और दूसरों की कमियों और कमज़ोरीयों पर उंगली उठाने की बजाय हमें अपने दिलों को खुला करते हुए हमदर्दी और हुस्न-ए-सुलूक का प्रदर्शन करना चाहिए। एक दूसरे के धर्मों पर हमला करने और बिला ज़रूरत दूसरों को भड़काने की बजाय यह वक़्त की फ़ौरी ज़रूरत है कि हम आपसी इज्ज़त एहतराम और बर्दाश्त का मुज़ाहरा करें। वास्तविक और स्थायी अमन अचानक स्थापित नहीं हो सकता बल्कि हम सब पर फ़र्ज़ है कि हम इन बातों पर अपना ध्यान केन्द्रित करें जो हमें आपस में मिलाएं और एक करें ना कि हमारे मतभेद हमें तक़सीम कर दें और समाज को तबाह कर दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: निसन्देह मैं स्वीकार करता हूँ कि हम दुनिया के इतिहास के नाज़ुक मोड़ से गुज़र रहे हैं जहां दुनिया क़ौमी और विश्वव्यापी स्तह पर तक़सीम दर तक़सीम हो रही है। हम तबाही के दहाने पर खड़े हैं। इसलिए अब वक़्त है कि हम पुन: जायज़ा लें और अपनी सारी ताकत इन्सान के भविष्य को सुरक्षित बनाने में व्यतीत करें। अब वक़्त है कि हम अपनी इन्सानियत को ज़ाहिर करें और अपने समाज, क़ौम बल्कि सारी दुनिया में अमन स्थापित करने के लिए हर संभावित कोशिश करें। यह तब ही संभव है कि जब हम आपस में मिल जाएं और एक दूसरे के अक़ीदों का सम्मान करें, तब ही हम इस दूरी को पार कर सकते हैं जो अक्सर दुनिया में फैल चुकी है। तब ही हम अपने बच्चों के लिए उम्मीद की किरण पैदा कर सकते हैं, तब ही हम अपने पीछे आने वाली नस्लों के लिए अमन वाला और ख़ुशगवार दुनिया छोड़ सकते हैं। हमें व्यक्तिगत लाभ और लालच की वजह से अंधा नहीं हो जाना चाहिए बल्कि हमें अपनी आँखें खोलनी चाहिऐं और साझे लाभ पर नज़र रखनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: में उम्मीद करता हूँ और दुआ करता हूँ कि हम सब मज़हब और अक़ीदा के भेद, इकट्ठे मिलकर ख़ैर ख़ाही और बाहम सम्मान के भावना के साथ काम कर सकें। हमारी साझी इच्छा यह होनी चाहिए कि हम अपने बाद आने वालों के लिए दुनिया को एक बेहतर जगह बनाएँ। हमारा साझा मक़सद अमन की स्थापना और सारी समाज के लोगों के मध्य आपसी मुहब्बत और ख़ैरख़ाही पैदा करना हो। हमें स्थायी यह कोशिश करनी होगी कि हम अपने पीछे अपने बच्चों के लिए एक अमन वाली दुनिया छोड़ें, जहां लोग मज़हब, क़ौम और अक़ीदा के भेद के बिना एक दूसरे के साथ मिलकर रह सकें। अल्लाह तआला हमें तौफ़ीक़ दे कि हम सब मिलकर इन्सानियत की बेहतरी के लिए काम कर सकें। आमीन।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आख़िर मैं आप सब का एक बार फिर शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि आप लोग यहां हमारे साथ शामिल हुए, अल्लाह तआला आप सब पर अपना फ़ज़ल फ़रमाए, आमीन। आप सब का बहुत बहुत शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 7 बजकर 25 मिनट तक जारी रहा। आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की साथ खाना खाया। खाने के बाद कुछ मेहमानों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर से मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया और कुछ ने निवेदन करके तस्वीरें बनवाईं।

आयोजन के बाद यहां से मस्जिद बैयतुर्रहमान के लिए रवानगी हुई। बाल्टीमोर से मस्जिद बैतुल रहमान का दूरी 34 मील है। साढ़े नौ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ यहां पधारे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मस्जिद तशरीफ़ लाकर नमाज़ मग़रिब तथा इशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

एक नेकी से दूसरी नेकी पैदा होती है

असल बात यह है कि बुरे कर्मों का नतीजा बुरे कर्म होता है। इस्लाम के लिए ख़ुदाए तआला का क़ानून क़ुदरत है कि एक नेकी से दूसरी नेकी पैदा हो जाती है। मुझे याद आया तज़केरतुल औलिया में मैंने पढ़ा था कि एक आतिश परस्त(आग की पूजा करने वाला) बूढ़ा नव्वे बरस की उम्र का था। संयोग से बारिश की झड़ी जो लग गई तो वो इस झड़ी में कोठे पर चिड़ियों के लिए दाने डाल रहा था। किसी बुज़ुर्ग ने पास से कहा कि अरे बुड्ढे तू क्या करता है ? उसने जवाब दिया कि भाई छ: सात दिन निरन्तर बारिश होती रही है। चिड़ियों को दाना डालता हूँ। उसने कहा कि तू व्यर्थ हरकत करता है। तू काफ़िर है। तुझे अज्र कहाँ? बूढ़े ने जवाब दिया। मुझे इस का बदला ज़रूर मिलेगा। बुज़ुर्ग साहिब फ़रमाते हैं कि मैं हज को गया तो दूर से क्या देखता हूँ कि वही बूढ़ा तवाफ़ कर रहा है। इस को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ और जब मैं आगे बढ़ा तो पहले वही बोला क्या मेरे दाने डालना व्यर्थ गया या उनका बदला मिला?

नेकी का बदला नष्ट नहीं होता

अब ख़्याल करना चाहिए कि अल्लाह तआला ने एक काफ़िर की नेकी का बदला भी नष्ट नहीं किया तो क्या मुसलमान की नेकी का बदला नष्ट कर देगा? मुझे एक सहाबी का ज़िक्र याद आया कि उसने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैंने अपने कुफ्र के ज़माना में बहुत से सदक़े किए हैं क्या उनका बदला मुझे मिलेगा। आपने फ़रमाया कि वही सदक़े तो तेरे इस्लाम का कारण हो गए हैं।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 61 से 63)

☆ ☆ ☆

रहमत की छतरी

हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अजीज़ फरमाते हैं कि

"कभी भी उन लोगों में से न बनें जिन के बारे में ख़ुद कुरआन करीम में वर्णन है कि

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا

(अल्फुर्कान 31)

और रसूल कहेगा कि हे मेरे रब्ब नि:सन्देह क़ौम ने इस कुरआन को विरक्त हो कर छोड़ दिया है।

..... और कभी भी यह आयत जो मैंने उपर पढ़ी है किसी अहमदी को अपनी लपेट में न ले ले हमेशा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का यह वाक्य हमारे दिमाग़ में होना चाहिए जो लोग कुरआन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाऐंगे। और जब हम इस तरह कर रहे होंगे तो कुरआन करीम हमें हर परेशानी से नजात देने वाला हमारे लिए रहमत की छतरी होगा..... अत: अब हर अहमदी का फर्ज़ है कि इस ज़माने में कुरआन करीम की तिलावत को भी और इस पर अनुकरण करने वाले को भी इस पर अनुकरण कर के अपने जीवन का स्थायी हिस्सा बनाएं ताकि हर अहमदी के कर्म से इन ज़ालिमों के मुंह अपने आप बन्द होते चले जाएं।

(अल्फज़ल इन्ट्रनेशनल 11 नवम्बर 2005 ई)

(नज़ारत इस्लाहो इर्शाद तालीमुल कुरआन वक्फ आरज़ी कादियान)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad